तत्त्ववादि वैष्णवा Handbook

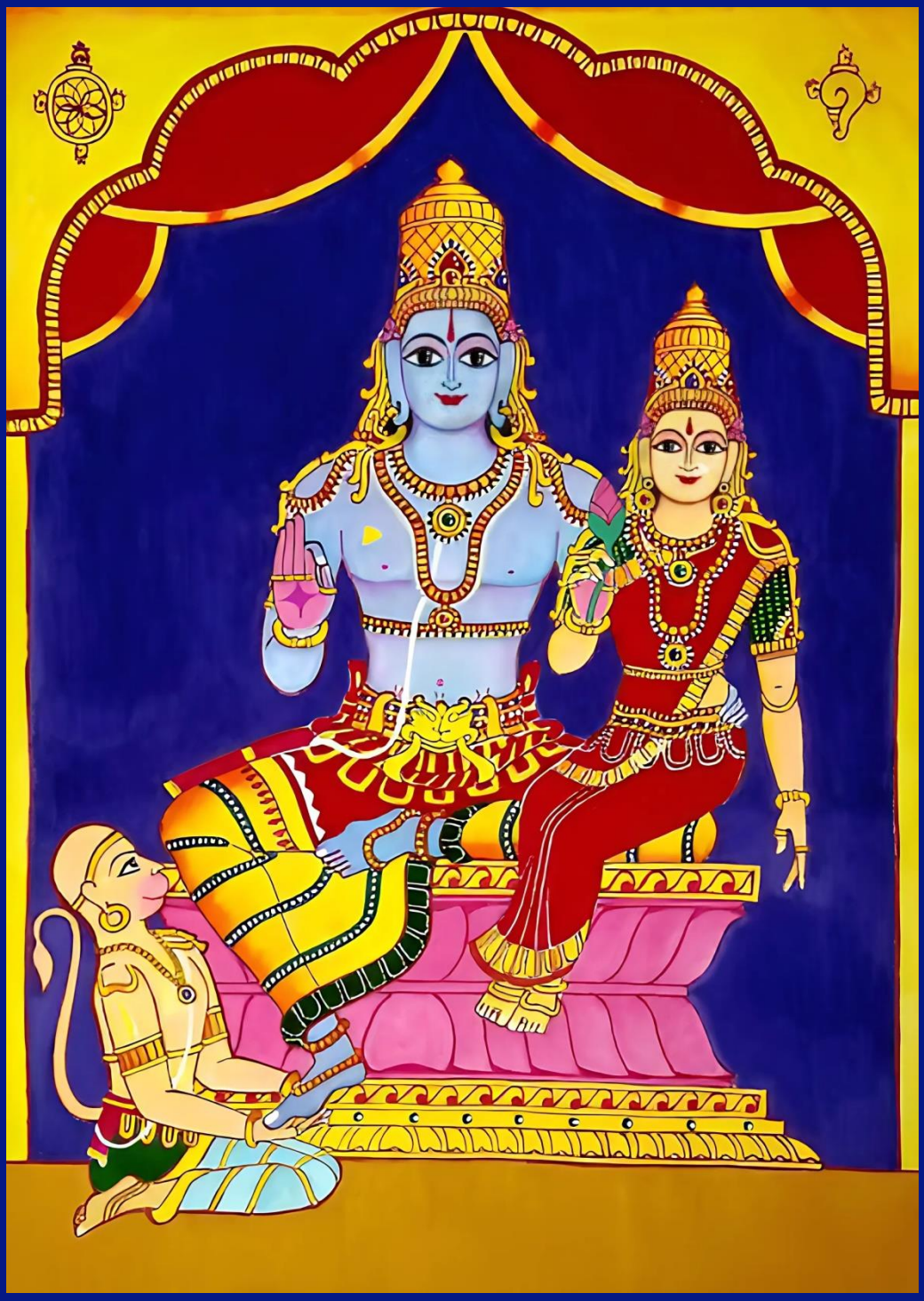

अच्युता भक्ति
डीट्स

श्री नारायणाय नमः ।

अच्युता भक्ति
डीट्स

तत्त्ववादि वैष्णवा Handbook

(Hindi Edition)

लेखक: प्राज्ञा पट्टडा हरि कुमारा

© Copyrights Achyuta Bhakti Deets

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

Tattvavaadi Vaishnava Handbook - Hindi

लेखक: प्राज्ञा पट्टडा हरि कुमारा

पृष्ठों की संख्या: ९९

पहला प्रकाशन: २३ September २०२४

नवीनतम प्रकाशन: १३ June २०२५

परिचय

येह किताब सारे माध्वों और अन्य वैष्णवों को स्तोत्रों, मन्त्रों, श्लोकों और दूसरे पद्धतियों का संकलन है । हर वैष्णव को उन्के नित्याचार मे लाभदायक होना इस्का उद्देश है ।

इस किताब मे जो भी अच्युता भक्ति डीट्स का नहि है, जैसे कुछ चित्रों, वोह सब अपने मालिकों का है ।

https://bhaktideets.org

https://elib.bhaktideets.org

Email: info@bhaktideets.org

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

आभार

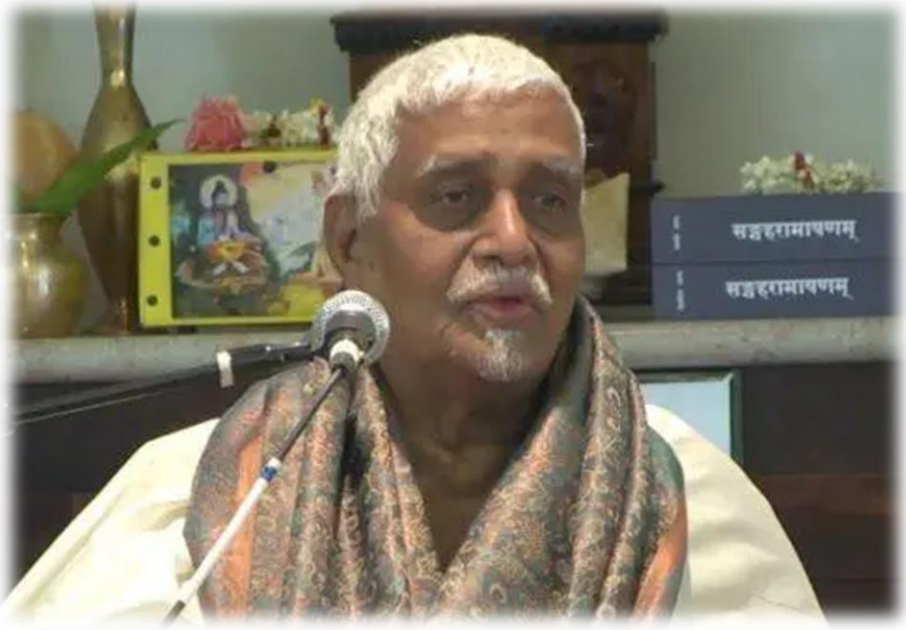

येह किताब विद्वान श्री बन्नन्जे गोविन्दाचार्या केलिये श्रद्धांजलि है, जिन्का सरल शास्त्रीय विवरणों का कारण, हम और बोहोत सारे लोग तत्त्ववाद सिद्धान्त तक पहुचे, और श्री मध्वाचार्य का श्रेष्ठता का पता लगा. इनका कारण, श्री मध्वाचार्य का द्वादशा स्तोत्रों का एक दुर्लभ पाठ भी मिलचुका है ।

हम श्रीमान अनन्ता श्री, श्रीमान प्रत्यर्थि गजाकेसरि, श्रीमान अभिनव और श्रीमान महासुदर्शना को धन्यवाद केहना चाते है, जिन्होने इस किताब का बोहोत मुख्य भागों को बनाने मे सहायता दिया है ।

लक्ष्मीलावण्यपीयूषपानपात्रायितेक्षणः ।
सनीरनीरदश्यामः पातु वो भगवान्हरिः ॥

"वोह भगवान हरि, जिन्का आन्खे पात्र कि तरह लक्ष्मी देवि का चमक को पिता है, जिस्को काला बादल का वर्ण और अनन्त गुणों है, तुम्हारा रक्षा करे ।"

—श्री त्रिविक्रम पण्डिताचार्या का उशाहरण महाकाव्य

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

खण्डों

१. हरिनामा और नित्याचार का पद्धति 7

- ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक का धारण 14
- भोजन का अर्पण 17
- तुळसि का प्रयोग 19
- एकादशि का नियमों 21
- विविध श्लोकों 22

२. वैदिक सूक्तों और मन्त्रो

- नारायणा उपनिषद 27
- नारायणा सूक्त 29
- विष्णु सूक्ता 31
- पुरुष सूक्त 32
- श्री सूक्त 36
- देवि सूक्त 38
- मन्यु सूक्त 39
- बळित्था सूक्त 41

३. श्री मध्वाचार्या का द्वादशा स्तोत्रों 43

- श्री नृसिंह नखा स्तुति 50

४. श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र

- परिचय 62
- मूल पाठ/पूर्वपीठिका 65
- न्यास और ध्यान 67
- स्तोत्र 69
- उत्तरन्यास/उत्तरपीठिका 78

५. श्री विष्णु स्तुति 82

६. श्री हरिवायु स्तुति 83

७. श्री नारायण पण्डिताचार्या का श्री नरसिंह स्तुति 91

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

८. श्री महालक्ष्मी स्तुति 93
९. श्री शिव स्तुति 96
१०. श्री पूर्णबोध स्तोत्र 98

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

१. हरिनामा और नित्याचार का पद्धति

येह श्री विष्णु का नामों है, जिन्को मुख्य कार्यों और जप, सन्ध्यावन्दन और दूसरे मुख्य कार्यों से पेहले, उच्चारण करना चाहिये. किसि मन्त्र का जाप करने केलिये एक गुरुसे वोह मन्त्र का उपदेश होना चाहिये. भगवत नामा का उच्चारण और जाप करने का महत्व बोहोत बार शास्त्रों मे प्रशंसा किया गया है ।

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

आर्ता विषण्णाशिथिलाश्च भीता घोरेषु च व्याधिषु वर्तमानाः ।
सङ्कीर्त्य नारायणशब्दमात्रं विमुक्तदुःखाः सुखिनो भवन्ति ॥

“जो लोग दुःख, कमजोरी, भय या रोगो मे है नारायणा शब्द का कीरतन करके हि उन्के दुःखसे मुक्त होकर सुखी बनते है ।”
—विष्णु सहस्रनाम का उत्तरपीठिका (श्री मधवाचार्यने कृष्णामृत महार्णव, श्लोक ६७मे; श्री वेदान्त देशिका ने रहस्यत्रयसारा, अध्याय २६मे उद्धरित किया है)

अवशेनापि यन्नाम्नि कीर्त्तिते सर्वपातकैः ।
पुमान् विमुच्यते सद्यः सिंहत्रस्तैर्मृगैरिव ॥ १९ ॥

"अनैच्छिक होतेहुए भी श्री हरि का नाम का उच्चारण करके व्यक्ति सारे पापों से मुक्त होता है, जैसे हि जानवरों शेर से डरते है ।"
— विष्णु पुराण, अंश ६, अध्याय ८, श्लोक १९ (श्री मधवाचार्यने कृष्णामृत महार्णव, श्लोक ६५मे; श्री वेदान्त देशिका ने रहस्यत्रयसारा, अध्याय २६मे उद्धरित किया है)

एतन्निर्विद्यमानानामिच्छतामकुतोभयम् ।
योगिनां नृप निर्णीतं हरेर्नामानुकीर्तनम् ॥ ११ ॥

“राजा, इस्स तरह श्री हरि का नम का उच्चारण करना मोक्ष प्राप्त करने का अवश्य उपाय कहा गया है जो (संसार का) भय से मुक्त होना चाते है और योगियों को ।”
—भागवत पुराण, स्कन्ध २, अध्याय १, श्लोक ११

> द्विजो (जिन्का उपनयन हो चुका है और ब्रह्मचर्य और दूसरे नित्यकर्मो कर्ते है) गुरु मन्त्र मे "श्री गुरुभ्यो नमः" के बाद, और दूस्रे मन्त्रो मे "श्री" के बदले प्रणवा (ॐ) का उच्चारण करसक्ते है. अद्विजों को प्रणवा का उच्चारण करन उपयुक्त नहि है । उत्तम परिणाम केलिये अद्विजों (जिन्का उपनयन नहि हुआ है) को प्रणव के बदले "श्रीम्" केहना उपयुक्त है. कुछ शास्त्रों मे ‘ओम्/ओं’ का उपयोग किया गया है. इस्को भी उच्चारण सब लोग करसक्ते है ।

"नमः" केहना सम्मान करने का एक तरीका है. "मः" का मत्लब "मै" याह अपने आप होता है. "न" का मत्लब "नहि" है. अपने व्यक्तित्व को भूल कर किसि और का सम्मान करने केलिये "नमः" कहा जाता है. इसिलिये इस्को भगवान, देवताओं, गुरुओं और दुसरे अधिकारियों केलिये इस्थमाल किया जाता है ।

श्री नारायणाय नमः ।

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

श्री नारायणको नमस्कार ।

श्री हरये नमः ।

श्री हरिको नमस्कार ।

श्री कृष्णाय नमः ।

श्री कृष्णको नमस्कार ।

श्री विष्णवे नमः ।

श्री विष्णुको नमस्कार ।

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

“कृष्णा, वासुदेवा, हरि, परमात्मा, अपना भक्तो का कष्टों का विनाशक, गोविन्दा, को नमस्कार और नमस्कार.”
—भागवत पुराण, स्कन्ध १०, अध्याय ७०, श्लोक १६

इन वाक्यों को मुख्य कार्यों याह सधनों से पेहले उच्चारण किया जाता है. इस्को "गुरु मन्त्र " कहा जाता है । इस्को "श्री हरिवायुगुरुभ्यो नमः" (श्री हरि, वायु और गुरुओं को नमस्कार) से भी शुरु किया जा सकता है. जो दीक्षित वैष्णवों होते है और जिन्को मन्त्रोपदेश हो चुका है, जाप से पेहले भी येह गुरु मन्त्र का उच्चारण करना चाहिये ।

देवता के ऊपर ध्यान से एक मन्त्र याह श्लोक का उच्चारण करने का कार्य को जाप कहा जाता है । नित्य साधना मे इस्को किया जाता है । इस्के लिये तुळसि याह नीम से तयार हुए मणियों से किया जाता है । बिना मणियों से भी जाप किया जासकता है, लेकिन मणियो कि वजह से जाप का सन्ख्या को याद रखना ज़रूरि नहि होंगा. मणियों को इस चित्रमे दिखाय गया तरह पकडना चाहिये और एक बार मन्त्र को बोलने के बाद, अगिला मणिपे उङगलि को रखना चाहिये । इस तरह १०८ याह जितना बार जाप करना है, मन्त्र को बोलना चाहिये ।

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

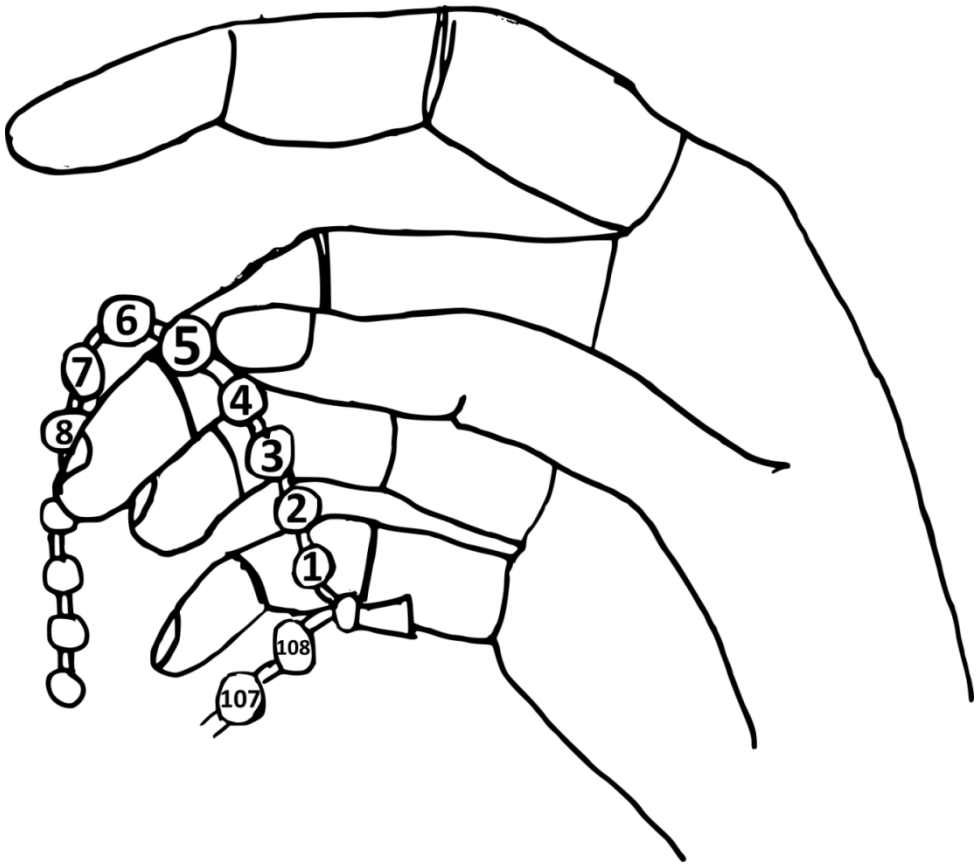

मन्त्र याह श्लोक का उपदेश को गुरु से लेना चाहिये और उस्के बाद, नित्य जाप करना है । जाप केलिये गुरु से उपदेश लेना ज़रूरि है और इस्के बिना सिर्फ़ कुछ वाक्यों का हि उच्चारण किया जासकता है, लेकिन उन्का जाप नहि. आम तौर पर, जाप १०८ बार किया जाता है । येह संख्या १०,८०० से व्युत्पन्न हुअ है । एक दिन मे इन्सान २१,६०० बार साँस लेता है और हर क्षण परमात्मा का ध्यान करना ज़रूरि है. अन्य कार्योंमे जाने वाला समय को चोड कर, १०,८०० बार जाप करना है. लेकिन इस्को सामन्य मनुष्यो नहि कर पायेगे. इसीलिये, १०८ का संख्या बताया गया है. मन्त्रों या श्लोकों का जाप १०, ११, ३, २४ याह ३२ बार भी किया जा सकता है । जाप करने का तीन रूपों है: वाचिक (मूह से मन्त्र का उच्चारण करना) उपांशु (धीरे से उच्चारण करना) और मानसिक (मन मे हि मन्त्र का उच्चारण करना) । पिछले विधियों से अगला वालों श्रेष्ठ माना जाते है ।

(ॐ) श्रीगुरुभ्यो नमः । श्रीपरमगुरुभ्यो नमः । श्री आदिगुरुभ्यो नमः । श्रीमूलगुरुभ्यो नमः । श्रीमदानन्दतीर्थबगवत्पादाचार्येभ्यो नमः । श्रीवेदव्यासाय नमः । श्रीभारत्यै नमः । श्रीसरस्वत्यै नमः । श्रीवायवे नमः । श्रीब्रह्मणे नमः । श्रीमहालक्ष्म्यै नमः । श्रीनारायणाय नमः । श्री हरये नमः । मोक्षप्रदश्रीवासुदेवाय नमः ।

“गुरुओं को नमस्कार. परमगुरुओं को नमस्कार. आदिगुरुओं को नमस्कार. श्रीमत आनन्दा तीर्था भगवतपादा आचार्य को नमस्कार. श्री वेदव्यासा को नमस्कार. श्रि भारती

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

देवि को नमस्कार. श्री सरस्वती देवि को को नमस्कार. श्री वायु को नमस्कार. श्री ब्रह्मा को नमस्कार. श्री महालक्ष्मी देवि को नमस्कार. श्री नारायणा को नमस्कार. श्री हरि को नमस्कार. मोक्ष का दाता श्री वासुदेवा को नमस्कार."

शोडशाक्षरि मन्त्र:

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥ १ ॥

नारायणं सुरगुरुं जगदेकनाथं भक्तप्रियं सकललोकनमस्कृतं च ।
त्रैगुण्यवर्जितमजं विभुमाद्यमीशं वन्दे भवघ्नममरासुरसिद्धवन्द्यम् ॥ २ ॥

"नारायण, नर (अर्जुन), नरोत्तम (भीम), देवि (लक्ष्मी देवि), सरस्वती (भारती देवि) और व्यासा को नमस्कार करके हि जया (महाभारत) को बोलना चाहिये. नारायणा को नमस्कार हरता हू जो सुरों का गुरु है, जगत का एक नाथ, अपना भक्तो को प्रिय, जिस्को सब लोक नमस्कार करते है, त्रिगुणों (सत्त्व, रजस और तमस) से अधिक, अजन्मा, अनन्त, प्राचीन और ईशा है, संसार से मुक्ति देता है और जिस्को देवताएं और मुक्त जीवों नमस्कार करते है."
—महाभारत, आदि पर्व, अध्याय १, श्लोकों १-२ (श्री मध्वाचार्यने महाभारत तात्पर्य निर्णय, अध्याय २, श्लोक ५८मे उद्धरित किया है; श्लोक १ भागवत पुराण, स्कन्ध १, अध्याय २, श्लोक ४ मे भी है)

अविकाराय शुद्धाय नित्याय परमात्मने ।
सदैकरूपरूपाय विष्णवे सर्वजिष्णवे ॥ १ ॥

नमो हिरण्यगर्भाय हरये शङ्कराय च ।
वासुदेवाय ताराय सर्गस्थित्यन्तकारिणे ॥ २ ॥

एकानेकस्वरूपाय स्थूलसूक्ष्मात्मने नमः ।
अव्यक्तव्यक्तरूपाय विष्णवे मुक्तिहेतवे ॥ ३ ॥

सर्गस्थितिविनाशानां जगतोऽस्य जगन्मयः ।
मूलभूतो नमस्तस्मै विष्णवे परमात्मने ॥ ४ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

"अविकार, शुद्ध, शाश्वत परमात्मा को जो सदा एक रूप का है, श्री विष्णु को जो सब का विनाशक है, जो हिरण्यगर्भा, हरि और शङ्कर है, वासुदेव को जो संसार से जीवों को निकलवाता है और जगत का सृष्टि, स्थिति और अन्त का कारण को नमस्कार । जिसका स्वरूप एक और अनेक भी है, जिसका आत्मा स्थूल और सूक्ष्म भी है, जो अव्यक्त है और व्यक्त भी है, श्री विष्णु को नमस्कार, जो मुक्ति का कारण है । जगत का सृष्टि, स्थिति और विनाश का कारण जो जगत को धारण करता है और उसका मूलभूत है – वोह श्री विष्णु, परमात्मा को नमस्कार ।"
—विष्णु पुराण, अंश १, अध्याय २, श्लोक १-४

ध्याना श्लोकों:

प्रसन्नवदनं चारुपद्मपत्रोपमेक्षणम् ।
सुकपोलं सुविस्तीर्णललाटफकोज्ज्वलम् ॥ ७९ ॥

समकर्णान्तविन्यस्य चारुकुण्डलभूषणम् ।
कंबुग्रीवं सुविस्तीर्णश्रीवत्साङ्कितवक्षसम् ॥ ८० ॥

वलित्रिभङ्गिना मग्ननाभिना ह्युदरेण च ।
प्रलम्बाष्टभुजं विष्णुमथवापि चतुर्भुजम् ॥ ८१ ॥

समस्थितोरुजङ्घञ्च सुस्थिताङ्घ्रिवराम्बुजम् ।
चिन्तयेद्ब्रह्मभूतं तं पीतनिर्मलवाससम् ॥ ८२ ॥

किरीटहारकेयूरकटकादिविभूषितम् ।
शार्ङ्गशङ्खगदाखड्गचक्राक्षवलयान्वितम् ।
वरदाभयहस्तं च मुद्रि कारत्नभूषितम् ॥ ८३ ॥

"प्रसन्न मुख, कमल का पत्ताएं जैसा सुन्दर आँखें, चिकने गाल, चौड़ा माथा, एक ही आकार का कानों जिनमे सुन्दर कुण्डल है, पतली गर्दन, चौड़ी छाती जिसमे श्रीवत्सा प्रतीक है, तीन परतों का पेट, गहरी नाभि, आठ याह चार हाथें, ठीकसे स्थित जाँघें और कमल जैसा पादों – इस्स रूपमे, जो ब्रह्म भूत है और निर्मल पीत वस्त्र धारण किया है, विष्णु का चिन्तन करना है, जिसे सुन्दार मुकुट, हारों कंगन और बाकि आभूषण धारण किया है, जिस्के साथ धनुष, शङ्ख, गदा, तलवार, मनकाएं, पद्म और बाण है । उस्का हाथ वरदा मुद्र (आशिर्वाद देने का) मे है और रत्नों से भूषित है ।"
—विष्णु पुराण अंश ६ अध्याय ७ श्लोकों ७९-८३

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

"शान्त रूप, साँप का शय्या होकर, नाभि मे पद्म, सुरेश, विश्व का धारक, आकाश कि तरह सर्वव्यापि, बादल का वर्ण, जिस्का हर अङ्ग शुभ है, लक्ष्मी का पति, कमल कि तरह आँखे, योगियों का ध्यान का गति – विष्णु, भय का नाशक और सारे लोकों का नाथ, को नमस्कार करता हू."
—विष्णु सहस्रनाम का ध्यान श्लोक

पूजा के बाद याह अपने आप को सुद्ध करने किलिये, श्री विष्णु का तीन नामों (अच्युता, अनन्ता और गोविन्दा) को बोलना चाहिये । श्री विजयीन्द्र तीर्था ने न्यायमौक्तिकमाला मे पद्म पुराण से इस श्लोक को उद्धृत किया है, जहा श्री रुद्र देव श्री विष्णु का इन नामों का महत्व बताता है और येह भी कि उसने हालहला विष को पीने से पेहले इन नामों का उच्चारण किया ।

नामत्रयप्रभावाच्च विष्णोस्सर्वगतस्य वै ।
विषं तदभवज्जीर्णं लोकसंहारकारणम् ॥

"सर्वव्यापि श्री विष्णु का येह तीन नामों (अच्युता, अनन्ता और गोविन्दा) का उच्चारण करनेसे, वोह (हालहला) विष जोह सारे लोकों को नष्ट करनेवाला था, उस्को मेने जीर्णित किया ।"
—पद्म पुराण, उत्तर खण्ड, अध्याय २३२, श्लोक १८

(ॐ) अच्युताय नमः । (ॐ) अनन्ताय नमः । (ॐ) गोविन्दाय नमः ।

"अच्युता को नमस्कार । अनन्ता को नमस्कार । गोविन्दा को नमस्कार ।"

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक का धारण

ऊर्ध्व पुण्ड्र का मत्लब है ऊपर का निषान. येह दो रेखों और उन्के बीच अंतर होने वाला तिलक है, जिस्को हर वैष्णव धारण करना चाहिये. येह नाख के ऊपर का नोक से केश तक जाना चाहिये । येह एक इन्सान का शरीर का शक्तियों का लक्षन है, जिन्को "चक्रो" कहा जाता है. सामन्य स्तिथि मे अध्यात्मिक शक्तियों पीठ के नीचे होते है । इस्को परमात्मा का ध्यान से ऊपर ब्रह्मरन्ध्र (सर के ऊपर का एक बन्द हुअ रन्ध्र) तक लेजाना है । ऐसे हि, नाक के मध्ये मे दोनो भौं के बीच, परमात्मा का ऊपर ध्यान करने का एक स्तळ है ।

तिलक का दोनो रेखों के बीच का अन्तर श्री विष्णु का रेहने का स्थळ है । ऊर्ध्वपुण्ड्र को बोहोत वस्तुओं से लगा जासकता है, जैसे पानि से भी । सामान्य स्तिथिमे, "गोपि चन्दन" नाम का एक तरह का मिट्टीसे तिलक धारण किया जाता है, जो पवित्र है और द्वारका के पास मिलता है ।

गोपि चन्दन को पानि मिलाके उस्का तिलक को धारण करते हुए, येह श्लोक को बोलना चाहिये ।

गोपीचन्दन पापघ्न विष्णुदेहसमुद्भव ।
चक्राङ्कित नमस्तुभ्यं धारणान्मुक्तिदो भव ॥

“पापनाशक गोपि चन्दन जो श्री विष्णु के शरीर से उत्पन्न हुअ है और चक्र का प्रतीक है — तुझे नमस्कार, जिस्को धारण करके मोक्ष दाता बनेग.”
—वासुदेवा उपनिषद

अपने दायां हाथ का बीच की ऊँगलीसे तिलक को धारण करो और थोडा दबाकर दोनो रेखों के बीच अन्तर बनेगा. नाक का ऊपर का नोक से डलते वक्त, ऊँगली को ऊपर केश तक लेजायिये और थोडा दबाकर अन्तर बनायिये ।

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

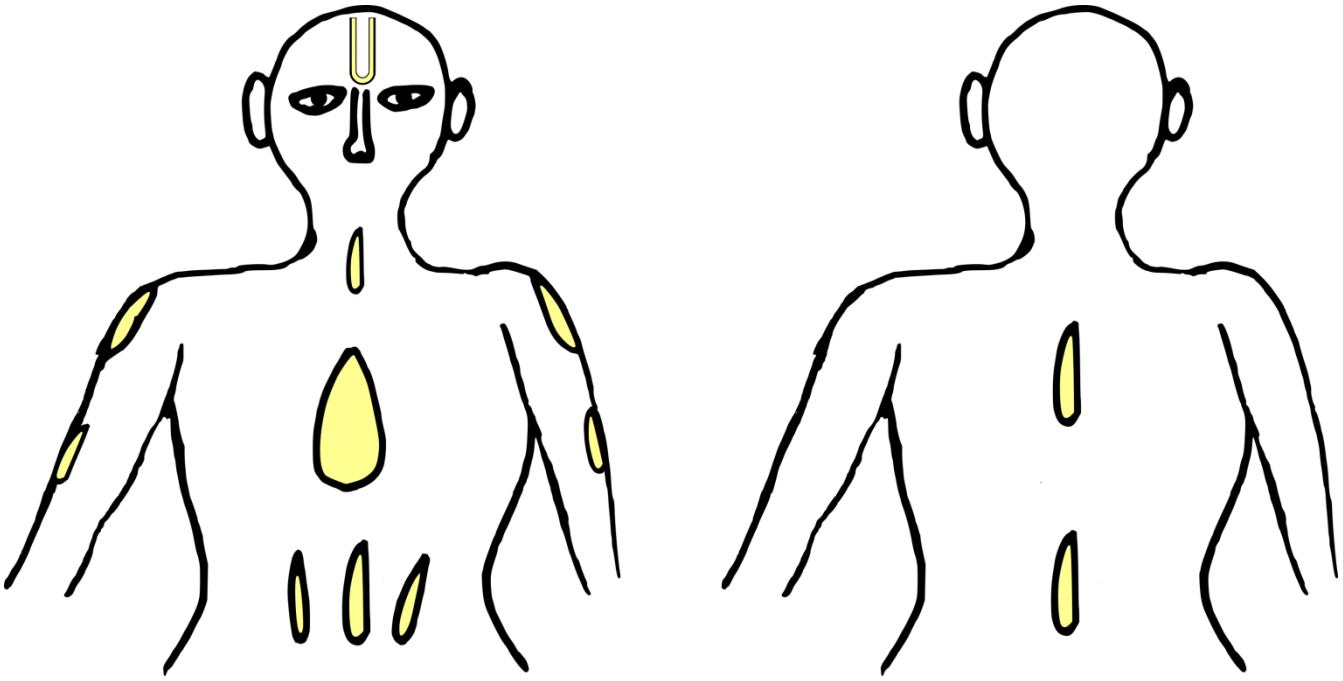

ऊर्ध्व पुण्ड्र को शरीर के १२ अङ्गों पे डलने से उस्को द्वादशा ऊर्ध्वपुण्ड्र कहा जाता है. इस्को धारण करते हुए, श्री विष्णु का इन बारह नामों को बोलना चाहिये । तलक को इस चित्र मे दिखाया गया हुअ रूप मे धारण करना है ।

माथा: श्री केशवाय नमः ।
पेट: श्री नारायणाय नमः ।
छाती: श्री माधवाय नमः ।
गला: श्री गोविन्दाय नमः ।
पेट का दाहिनी ओर: श्री विष्णवे नमः ।
दायां हाथ: श्री मधुसूदनाय नमः ।
दायां कंधा: श्री त्रिविक्रमाय नमः ।
पेट का बायां ओर: श्री वामनाय नमः ।
बायां हाथ: श्री श्रीधराय नमः ।
बायां कंधा: श्री हृषीकेशाय नमः ।
पीठ के ऊपरि हिस्से: श्री पद्मनाभाय नमः ।
पीठ के निचले हिस्से: श्री दामोदराय नमः ।

शङ्ख और चक्र का मुद्रों को गोपी चन्दन से मुख का दाय और बायपे धारण करने केलिये, येह श्लोकों को बोलना चाहिये ।

शङ्ख मुद्र:

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

पाञ्चजन्य निजध्वान ध्वस्तपातक संचय ।
त्राहिमां पापिनां घोरसंसारार्णव पातिनं ॥

चक्र मुद्र:

सुदर्शन महाज्वाल कोटिसूर्यसमप्रभ ।
अज्ञानांधस्य मे नित्यं विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

भोजन का अर्पण

भोजन करते समय, उसे खाने से होने वाले बुरे प्रभावों और पाप कर्मों का नाश करने के लिए, श्री हरि को नैवेद्य अवश्य अर्पित करना चाहिए । भोजन करने से पहले भगवान को भोजन अर्पित करने की सबसे बुनियादी विधि है, 'श्रीकृष्णार्पणमस्तु' (यह श्री कृष्ण के लिए अर्पण बन जाए का (उच्चारण करना और भोजन करते समय मन मे 'गोविन्दा' का उच्चारण करना, या 'श्री वैश्वानराय नमः' का उच्चारण करना, जिसमें श्री विष्णु को आत्मा का अंतर्यामी मानकर उसका भोक्ता माना जाता है. निम्नलिखित श्लोक का उच्चारण करना चाहिए:

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ २४ ॥

"ब्रह्म ही अर्पण करने का कार्य है, ब्रह्म ही आहुति है, ब्रह्म ही ब्रह्म द्वारा अग्नि में आहुति दी जाती है. ब्रह्म ही वह लक्ष्य है जिसे वे प्राप्त कर सकते हैं जिनके कर्म पूर्णतः ब्रह्म में लीन हैं."
— भगवत गीता, अध्याय ४, श्लोक २४

इसके अतिरिक्ता भोजन से पहले या बाद में विष्णु सहस्रनाम की पूर्वपीठिका (श्लोक १० से १३) में भीष्म द्वारा रचित स्तुति या विष्णु सहस्रनाम के १६वें श्लोक का उच्चारण किया जा सकता है ।

भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ १६ ॥

वैष्णव को आदर्श रूप से केवल सात्विक भोजन ही खाना चाहिए, सभी निषिद्ध खाद्य पदार्थों से परहेज करना चाहिए. मांस, शराब, ड्रमस्टिक, मशरूम, बैंगन और मूली सभी वैष्णवों के लिए सख्त वर्जित हैं, साथ ही अन्य निषिद्ध खाद्य पदार्थ, जो स्वभाव से राजसिक या तामसिक हैं । पेहले बताए गए खाद्य पदार्थ सबसे अधिक वर्जित हैं और इनका सेवन किसी को द्विज या वैष्णव होने से अयोग्य बनाता है । उडुपी क्षेत्र में उपलब्ध बैंगन की एक किस्म जिसे "मत्तु गुल्ला" या "वादीराजा गुल्ला" के नाम से जाना जाता है, वोह सात्विक है और इस्का सेवन किया जा सकता है ।

आदर्श नैवेद्य:

- भोजन को शुद्ध मन से वैष्णव द्वारा पकाया जाना चाहिए.
- भोजन का अर्पण करने से पहले सूंघना, देखना और चखना नहि चाहिए.

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

- यदि सुगंध की आवश्यकता हो तो खाना पकाने वाला व्यक्ति मानसिक रूप से लक्ष्मी देवी का अनुष्ठान कर सकता है.
- स्टील या चीनी मिट्टी की प्लेटों में नहीं परोसा जाना चाहिए.

फर्श पर उंगली से एक छोटा सा चौकोर मंडल बनाएं, उसे पानी में डुबोएं और उस पर नैवेद्य वाली थाली रखें ।

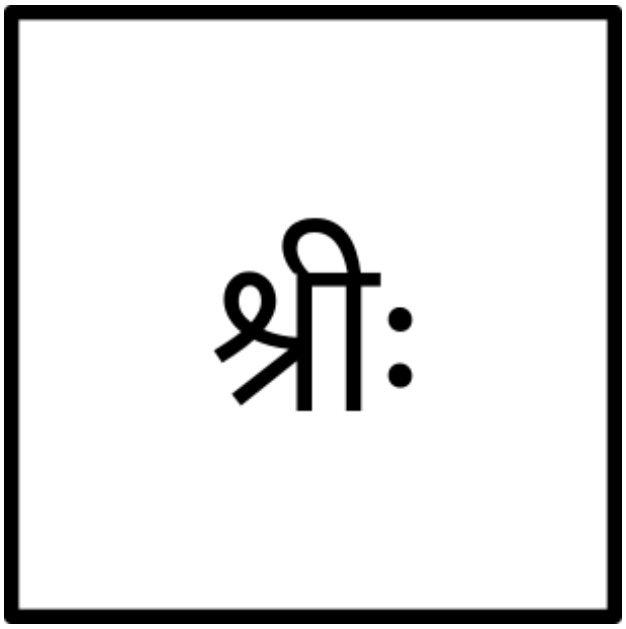

फिर अपने हाथ में कुछ तुलसी के पत्ते और थोड़ा पानी लेकर उसे थाली के चारों ओर घुमाते हुए कहें 'श्रीभारतीशांतर्गत नैवेद्यं समर्पयामि' । थाली में तुलसी के पत्ते रखें और कुछ मिनट के लिए अपनी आंखें बंद कीजिये । फिर भोजन लें, उसे एक बर्तन में रखें और परोसें ।

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

तुळसि का प्रयोग

तुळसि पौधा श्री विष्णु का पूजा मे बोहोत मुख्य है. तुळसि पौधो मे लक्ष्मी देवि का आवेश होता है, जोह तुळसि देवि है. पुराणो मे बताया गया है कि किसि भी नैवेद्य या पूजा को पूर्ण बनाने केलिये, तुळसि का प्रयोग मुख्य है.

तुळसि पौधा कि वजह से गर्ह मे शुभ होता है और दुर्घटनों दूर होते है. इसीलिये कहा गया है:

मन्दारकुन्दकुरबोत्पलचम्पकार्णपुन्नागनागबकुलाम्बुजपारिजाता: ।
गन्धेऽर्चिते तुलसिकाभरणेन तस्या यस्मिंस्तप: सुमनसो बहु मानयन्ति ॥ १९ ॥

“मन्दरा, कुन्दा, कुरुबका, उत्पला, चंपक, अरण, पुन्नगा, नागकेशर, बकुल, अंबुजा और पारिजाता सुगंधित पौधाएं है, लेकिन वोह भी तुळसि को हि श्रेष्ट केहते है, जिस्का पूजा किया जाता है और उस्का पत्ताएं मालों मे इस्तेमाल किया जाता है, उस्कि तपस और शुद्ध मनस का कारणसे.”
—भागवत पुराण, स्कन्ध ३, अध्याय १५, श्लोक १९

तुळसि पौधा के पास, इस श्लोक को बोल कर तुळसि देवि को नमस्कार कीजिये:

महाप्रसाद जननी सुख सौभाग्य वर्धिनी ।
आधि व्याधिं च हरमे तुळसी त्वं नमाम्यहं ॥

“महाप्रसाद का जननी, सुख और सौभाग्य देनेवाला और व्याधियों को नष्ट करने वाला तुळसि – तुम को मे नमस्कार करता हु.”

तुळसि पत्ताएं को उठाते वक्त इस श्लोक को बोलिये:

तुळस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया ।
केशवार्थं चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने ॥

“हे अमृतसे जन्म लेने वालि तुळसि, तुम सदा केशव के लिये प्रिया हो. केशवा के लिये मे तुम्हारा पत्तों को लेरहा हू. अपना आशिर्वाद दो.”
—पद्म पुराण, सृष्टि खण्ड, अध्याय ६१, श्लोक १२

नियमों:

- एक बार सिरफ़ पत्ता को हि उठान चाहिये
- सवधानिसे पत्ताएं को बिना औजार उठान चाहिये

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

- पत्ताएं को सिरफ़ दिनमे हि उठान चाहिये, सूर्योदय से सूर्यास्त के समय तक हि
- तुळसी के पत्ते केवल शनिवार, सोमवार, बुधवार और गुरुवार को ही तोड़े जा सकते हैं.
- द्वादशि, पूर्णिमा और अमावस्या के दिन पत्ताएं को उठान मना है.
- दांया हाथसे पत्ताएं को उठान चाहिये और बायां हाथसे शाखा को पकडना चाहिये

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

एकादशि का नियमों

हर पखवाड़ा का ११ दिन, शुक्ल पक्ष मे या कृष्ण पक्ष मे, "एकादशि" कहा जाता है. येह हर वष्णवा केलिये बोहोत मुख्य है और उपवास करना अनिवार्य है, जब वोह निरोग है. जब पन्चाङ्ग मे एकादशि का तिथि शुरु होता है, उपवास का व्रत भी शुरु करना है और समाप्त एकादशि का समाप्त होने पर होता है. शास्त्रों मे बोहोत बार इस्का महत्व बताया गया है और इस्से पेट को आराम मिलता है और आरोग्य बडता है. आदर्श रूप मे, उपवास निर्जला होना चाहिये, यानि पानि के भी बिना. लेकिन इस्को अनुभवहीन लोग नहि करना चाहिये. सालों से उपवास करके करके हि अनुभव से निर्जला उपवास करने का क्षमता प्राप्त हो सकता है. व्रत को सहि समय पर समाप्त करना भी मुख्य है, जब अगला दिन का सूर्योदय हो चुका है और द्वादशि का तिथि समाप्त होने से पेहले, जिस्को “पारण” कहा जाता है. अन्यथा आरोग्य को हानि हो सकता है और व्रत का पुण्य भी खो जायेगा. पानि को भी पी कर इस्को किया जासकता है. पन्चाङ्ग के अनुसार पारण का समय देखना चाहिये. भागवत पुराण मे महाराज अंबरीश भी यहि करता है, जब दुर्वास मुनि उन्का अथिति थे और उन्होने अपना भोजन आरंभ नहि किया था.

अगर एकादशि का तिथि सूर्योदय से २ मुहूर्तों (४ घटिकाएं) पेहले शुरु होता है, तोह उस्को "संपूर्ण एकादशि" कहा जाता है. वोह दिन उपवास करना चाहिये. एक घटिका २४ मिनट होता है और २ मुहूर्तों १ घन्टा ३६ मिनट होता है. अगर एकादशि का तिथि सूर्योदय से २ मुहूर्तों पेहले शुरु नहि हुअ और दशमि का तिथि कुच देर और चला, तोह उपवास को द्वादशि के दिन करना है और पारण को उस्के अगला दिन, त्रयोदशि. उदाहरण, अगर दशमि तिथि ३१ July के सुबह, सूर्योदय के बाद खतम होता है और एकादशि वहि दिन शुरु होता है, उपवास को १ August करना चाहिये.

शुरुआती लोग हल्का भोजन, फल और पानी लेकर शुरुआत कर सकते हैं, जबकि हर एकादशी पर धीरे-धीरे भोजन छोड़ना चाहिए. व्यक्ति को आदर्श स्थिति में भी रहना चाहिए और उपवास के कारण उत्पादकता से समझौता नहीं करना चाहिए. एकादशी पर अतिरिक्त जप, शास्त्रों का पाठ आदि करने की सलाह दी जाती है. बालों में कंघी करने, खुद को स्टाइल करने (विशेष रूप से दर्पण के सामने), दांत साफ करने आदि नहि करना चाहिए.

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

विविध श्लोकों

येह श्लोकों को दिनमे करने वाले कार्योंके बिच बोलना चाहिये ।

सुबह उटने पे:

(उटने के बाद, श्री नारायणा का नाम कुच बार बोलिये)

कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वति ।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ॥

“लक्ष्मि देवि हाथ उंगली की नोक पे रहती है, सरस्वति देवि हाथ के मध्य मे और गोविन्दा हाथ के मूल पे. इस्को सुबह देखिये.”

सुबह उटकर ज़मीन चूने से पहले:

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नी नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्वमे ॥

“हे देवि, जिन्का वस्त्रों समुद्र है और छाति पर्वतो, तुम्को नमस्कार, श्री विष्णु का पत्नी. तुम्को मेरे पैर से चूने केलिये क्षमा करो.”

स्नान करते हुए:

गङ्गेच यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

“गङ्गा, यमुना, गोदावरि, सरस्वति, नर्मदा, सिन्धु और कावेरि, अपना उपस्थिति इस्स पानि मे बनायिये.”

समुद्र मे स्नान करने पे:

अपामधिपतिस्त्वं च तीर्थेषु वसतिस्तव ।
वरुणाय नमस्तुभ्यं स्नानानुज्ञां प्रयच्छ मे ॥

“पानि का अधिकारि जो हर तीर्थमे रेहते हो – तुझे नमस्कार, वरुणा. मुझे स्नान करने कि अनुमति दो.”

अपने आप को पवित्र बनाने केलिये, मुख्य पुजाओं से पेहले याह जब स्नान करना असंभव हो:

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा ।
यस्स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरश्शुचिः ॥

“अपवित्र या पवित्र, किसि भी स्तिथि और गति मे, जो पुण्डरीकाक्षा को याद करेंगा, वोह बाहर और अन्दर से शुद्ध हो जायेगा.”

घर से बाहार जाते समय:

अग्रतो नारसिंहश्च पृष्ठतो गोपीनन्दनः ।
उभयोहो पार्श्वयोरास्तां सशरौ राम लक्ष्मणौ ॥

“नरसिंह ऊपर है, गोपिनन्दन पीचे है. पासमे, बाणों को लेकर, राम और लक्ष्मण है.”

सफ़र का समय:

कुङ्कुमाङ्कित वर्णाय कुन्देन्दु धवळाय च ।
विष्णुवाहन नमस्तुभ्यं पक्षिराजाय ते नमः ॥

“कुन्कुम का वर्ण और धवल रोशन, विष्णु का वाहन, तुम्हे नमस्कार, पक्षिराजा, तुझे नमस्कार.”

तीर्था लेते हुए:

अकाल मृत्यु हरणं सर्वव्याधि निवारणं ।
समस्त दुरितोपशमनं विष्णु पादोदकं शुभम् ॥

“आकाल मृत्यु और हर रोग का विनाशक, हर दोष का विनाशक – श्री विष्णु का चरण का पानि शुभ है.”

जब दवा लेना है/रोग है:

शरीरे जर्जरी भूते व्याधिग्रस्ते कळेबरे ।
औषधं जाह्नवीतोयं वैद्यो नारायणो हरिः ॥

“ग्लानिमय शरीर मे जब आत्मा को व्याधियों पकडते है, गङ्गा का बूँद हि दवा है और वैद्य नारायण, हरि.”

अच्युतानन्त गोविन्द नामोच्चारण भेषजात् ।
नश्यन्ति सकलरोगाः सत्यंसत्यं वदाम्यहं ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

“अच्युता, अनन्ता और गोविन्दा – इन तीनो नामों का उच्चारण हर रोग का नाश करने का दवा है. मै सत्य और सत्य को बोल रहा हू.”
—पद्म पुराण, उत्तर खण्ड, अध्याय ७८, श्लोकों ५३-५४

अश्वत्था पेड को नमस्कार करने केलिये:

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणी ।
अग्रतः शिवरूपाय अश्वत्थाय नमो नमः ॥

“जिस्का जड़ ब्रह्मा के रूप मे है, मध्य विष्णु का रूप मे है और ऊपर का भाग शिव का रूप मे है, अश्वत्था पेड को नमस्कार और नमास्कार.”

साधनों मे श्लोकों का गलत उच्चारण का दोषो को नाश करने केलिये:

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

“बिना सहि मन्त्रोंके, बिना सहि विधियोंके, बिना भक्तिसे, जनार्दना, जो पूजा मै ने किया है, उस्को पूर्ण बन जाये.”
—विष्णु संहिता, पटला २८, श्लोको ८७-८८

यद्दत्तं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम् ।
आवेदितं निवेद्यान् तु तद् ग्रिहननुकंपया ॥

“जो पत्ते, फूलों, फलों और पानि मै ने केवल भक्तिसे दिया है, करुणा से उनसब को स्वीकार करो.”

विधिहीनं मन्त्रहीनं यत्किञ्चदुपपदितं ।
क्रियामन्त्रविहीनं वा तत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि ॥

“बिना विधियों और मन्त्रों से जो भी मै ने किया है – उन सब को क्षमा करो.”

> गलत उच्चारण का दोषों का नाश केलिये, इन श्लोकों के साथ, द्विजों पुरुष सूक्त का भी उच्चारण करसकते है.

हानि को रोकने केलिये:

कार्तवीर्यार्जुनोनाम राजा बाहू सहस्रवान् ।
तस्य नामस्मरणमात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

“कार्तवीर्य अर्जुन नाम का राजा को हज़ारों हाथ था. उन्का नाम का स्मरण से हि, हानियों नष्ट हो जाते है और लाभ मिलता है.”

अपना पापों का नाश केलिये प्रार्थना करने केलिये:

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽहमिति मां मत्वा क्षमस्व पुरुषोत्तम ॥

“हज़ारों अपराधो मुझसे होचुके है. मै दास हू – येह समज कर मुझसे हुअ पाप को क्षमा करो, पुरुषोत्तमा.”

पापोहं पापकर्माहं पापात्म पाप संभवः ।
त्राहिमां कृपया देव शरणागतवत्सल ॥

“मै पाप हूं, मै पाप कर्म हूं, पापात्मा हूं और पाप से उत्पन्न हुअ हूं. मेरा रक्षा करो, शरणागतवत्सला.”

अज्ञानादथवा ज्ञानादशुभं यन्मया कृतम् ।
क्षन्तुमर्हसि तत्सर्वं दास्येन च ग्रहाण माम् ॥

“अनजाने और जानबूझ कर जो अशुभ कार्यों मै ने किया है – उन सब को क्षमा करो, मुझे दास समज कर.”

(प्रदक्षिणा करते समय येह नीचे का श्लोक का उच्चारण कीजिये)

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥

“जो जो पापों बोहोत जन्मों से कर्चुका हू, उन सब का विनाश प्रदक्षिण करेंगा, बार बार.”

दीप को जलाते समय:

शुभं करोति कल्याणम् आरोग्यं धन सम्पदः ।
शत्रुबुद्धि विनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

“शुभ, कल्याण, आरोग्य, और धन को बनाने वाला और शत्रुबुद्धि का विनाश करने वाला दीप का ज्योति को नमस्कार.”

दीपज्योतिः परब्रह्म दीपज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे पापं दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

“दीप का ज्योति पर ब्रह्म है, दीप का ज्योति जनार्दना है. दीप मेरा पापों का हरण करे. मै दीप का ज्योति को नमस्कार करता हू.”

सारे कार्यों और उन्के परिणामों को श्री विष्णु को अर्पण करने केलिये और भगवान का कृपा को माँगने केलिये:

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष जनार्दन ॥

“अन्य शरण मुझे नहि है और केवल तुम हि मेरे शरण हो. इसीलिये, करुणा से, रक्षा करो और रक्षा करो, जनार्दना.”

संसारं दुष्करं घोरं दुर्निरीक्षं दुरासदम् ।
भीतोऽहं दारुणं दृष्ट्वा त्राहि मां भव सागरात् ॥

“येह घोर संसार सहन नहि किया जासकता. मै भयभीत हू. इस्को देख कर, मेरा रक्षा करो.”

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि विहितं यन्मया शुभं ।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु प्रीतो भव जनार्दन ॥

“जान बुझकर या अनजाने किया जोह भी शुभ कार्यों मै ने किया है - वोह सब पूर्ण बनजाये और तुझे प्रसन्न करे, जनार्दना.”

(इस श्लोक को दिन के अन्त मे या मुख्य कार्यों के बद उच्चारण किया जा सकता है)

कायेन वाचा मनसेन्द्रियर्वा बुद्ध्यात्मना वानुसृतस्वभावात् ।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥

“शरीर से, भाषण से, मनस से, इन्द्रियों से, बुद्धि से, आत्मा से और अपने स्वभाव से, जो किया गया है, वोह सब को मे नारायण को समर्पण करता हू.”
—विष्णु सहस्रनामा का उत्तरपीठिका (भागवत पुराण, स्कन्ध ११, अध्याय २, श्लोक ३६; श्री मध्वाचार्य ने कृष्णामृता महार्णवा, श्लोक १६ मे उद्धरित किया है)

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

२. वैदिक सूक्तो और मन्त्रो

येह भाग मे वेद मन्त्रों है और सिर्फ़ द्विजो हि इन्का उच्छारण करसक्ते है. दुस्रों इस्को चोड सक्ते है.

नारायण उपनिषद

(कृष्ण यजुर्वेद)

नारायणोपनिषत्

ॐ स॒ह ना॑ववतु ।
स॒ह नौ॑ भुनक्तु ।
स॒ह वी॒र्यं॑ करवावहै ।
ते॒ज॒स्विना॒वधी॑तमस्तु मा वि॑द्विषा॒वहै॑ ॥
ॐ शान्ति॒: शान्ति॒: शान्ति॑: ॥

ॐ अथ पुरुषो ह वै नारायणोऽकामयत प्रजाः सृ॑जेये॒ति । ना॒रा॒य॒णात्प्रा॑णो जा॒यते । मनः सर्वेन्द्रि॑याणि॒ च । खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्व॑स्य धा॒रिणी । ना॒रा॒य॒णाद्ब्र॑ह्मा जा॒यते । ना॒रा॒य॒णाद्रु॑द्रो जा॒यते । ना॒रा॒य॒णादि॑न्द्रो जा॒यते । ना॒रा॒य॒णात्प्रजापतयः प्र॑जाय॒न्ते । ना॒रा॒य॒णाद्द्वादशादित्या रुद्रा वसवस्सर्वाणि च छं॑न्दाग्ं॒सि । ना॒रा॒य॒णादेव समु॑त्पद्य॒न्ते । ना॒रा॒य॒णे प्र॑वर्त॒न्ते । ना॒रा॒य॒णे प्र॑लीय॒न्ते ॥

ॐ । अथ नित्यो ना॑राय॒णः । ब्रह्मा ना॑राय॒णः । शि॒वश्च॑ नाराय॒णः । श॒क्रश्च॑ नाराय॒णः । द्या॒वा॒पृ॒थि॒व्यौ च॑ नाराय॒णः । का॒लश्च॑ नाराय॒णः । दि॒शश्च॑ नाराय॒णः । ऊ॒र्ध्वश्च॑ नाराय॒णः । अ॒धश्च॑ नाराय॒णः । अ॒न्त॒र्ब॒हिश्च॑ नाराय॒णः । नारायण एवे॑दग्ं स॒र्वम् । यद्भू॒तं यच्च॒ भव्य॑म् । निष्कलो निरञ्जनो निर्विकल्पो निराख्यातः शुद्धो देव एको॑ नाराय॒णः । न द्वि॒तीयो॑ऽस्ति॒ कश्चि॑त् । य ए॑वं वे॒द । स विष्णुरेव भवति स विष्णुरे॑व भ॒वति ॥

ओमित्य॑ग्रे व्या॒हरेत् । नम इ॑ति प॒श्चात् । ना॒रा॒य॒णायेत्यु॑परि॒ष्टात् । ओमि॑त्येका॒क्षरम् । नम इति॑ द्वे अ॒क्षरे । ना॒रा॒य॒णायेति पञ्चा॑क्षरा॒णि । एतद्वै नारायणस्याष्टाक्ष॑रं प॒दम् । यो ह वै नारायणस्याष्टाक्षरं पद॑मध्ये॒ति । अनपब्रवस्सर्वमा॑यु॒रेति । विन्दते प्रा॑जाप॒त्यग्ं रायस्पोषं॑ गौप॒त्यम् । ततोऽमृतत्वमश्नुते ततोऽमृतत्वमश्नु॑त इ॒ति । य ए॑वं वे॒द ॥

प्रत्यगानन्दं ब्रह्म पुरुषं प्रणव॑स्वरू॒पम् । अकार उकार मका॑र इ॒ति । तानेकधा समभरत्तदे॑तदोमि॒ति । यमुक्त्वा॑ मुच्य॑ते यो॒गी॒ ज॒न्म॒संसा॑रब॒न्धनात् । ॐ नमो नारायणायेति म॑न्त्रोपा॒सकः । वैकुण्ठभुवनलोकं॑ गमि॒ष्यति । तदिदं परं पुण्डरीकं॑ विज्ञान॒घनम् ।

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

तस्मात्तदिदांवन्मात्रम् । ब्रह्मण्यो देवंकीपुत्रो ब्रह्मण्यो मंधुसूदनोम् । सर्वभूतस्थमेकं नारायणम् । कारणपुरुषमकारणं पंरब्रह्मोम् । एतदथर्व शिरोंयोऽधीते ॥

प्रातरंधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायमंधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । माध्यन्दिनमादित्याभिमुखोंऽधीयान:पञ्चपातकोपपातकाँत्प्रमुच्यते । सर्व वेद पारायण पुंण्यं लभते । नारायणसायुज्यमंवाप्नोति नारायण सायुज्यमंवाप्नोति । य एंवं वेद । इत्युंपनिषंत् ॥

ॐ सह नांववतु ।
सह नौं भुनक्तु ।
सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्विनावधींतमस्तु मा विंद्विषावहैं ॥
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्तिं: ॥

इति श्री नारायणोपनिषत् ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

नारायण सूक्त

(कृष्ण यजुर्वेद, तैत्तिरीय आरण्यक, प्रपाठक १०, अनुवाका १३)

नारायणसूक्तम्

सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशम्भुवम् ।
विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम् ॥ १ ॥

विश्वतः परमं नित्यं विश्वं नारायणꣳ हरिम् ।
विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्वमुपजीवति ॥ २ ॥

पतिं विश्वस्यात्मेश्वरꣳ शाश्वतꣳ शिवमच्युतम् ।
नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम् ॥ ३ ॥

नारायणः परो ज्योतिरात्मा नारायणः परः ।
नारायण परं ब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः ॥ ४ ॥

नारायण परो ध्याता ध्यानं नारायणः परः ।
यच्चं किञ्चिज्जगत्सर्वं दृश्यतेऽपिं वा ॥ ५ ॥

अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः ।
अनन्तमव्ययं कविꣳ समुद्रेऽन्तं विश्वशम्भुवम् ॥ ६ ॥

पद्मकोशप्रतीकाशꣳ हृदयं चाप्यधोमुखम् ।
अधो निष्ट्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति ॥ ७ ॥

ज्वालामालाकुलं भाती विश्वस्यायतनं महत् ।
सन्ततꣳ शिलाभिस्तु लम्बत्याकोशसन्निभम् ॥ ८ ॥

तस्यान्तें सुषिरꣳ सूक्ष्मं तस्मिन्सर्वं प्रतिंष्ठितम् ।
तस्य मध्यें महानग्निर्विश्वार्चिर्विश्वतोमुखः ॥ ९ ॥

सोऽग्रंभुग्विभजन्तिष्ठन्नाहारमजरः कविः ।
तिर्यगूर्ध्वमधश्शायी रश्मयस्तस्य सन्ततः ॥ १० ॥

सन्तापयति स्वं देहमापादतलमस्तकः ।
तस्य मध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थितः ॥ ११ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

नी॒लतो॑यद॒॑मध्य॒स्था॒द्वि॒द्युल्ले॑खेव॒ भास्व॑रा ।
नी॒वार॒शूक॑वत्त॒न्वी॒ पी॒ता भा॒स्वत्य॒णूपमा ॥ १२ ॥

तस्याः᳚ शिखा॒या म॑ध्ये प॒रमा᳚त्मा व्य॒वस्थि॑तः ।
स ब्रह्म॒ स शिव॒स्स हरि॒स्सेन्द्र॒स्सोऽक्ष॑रः पर॒मः स्व॒राट् ॥ १३ ॥

ऋ॒तꣳ स॒त्यं प॑रं ब्र॒ह्म॒ पु॒रुषं॑ड् कृष्ण॒पिङ्ग॑लम् ।
ऊ॒र्ध्वरे॑तँ वि॑रूपा॒क्षँ॒ वि॒श्वरू॑पाय॒ वै नमो॒ नमः॑ ॥

ॐ ना॒रा॒य॒णाय॑ वि॒द्महे॑ वा॒सु॒दे॒वाय॑ धीमहि ।
तन्नो॑ विष्णुः प्रचो॒दया᳚त् ॥ (येह महानारायण उपनिषद का २९वाला मन्त्र, जिसे 'विष्णु गायत्रि' कहा जाता है, जिस्को अन्त मे बोल जाता है)

ॐ शा॒न्ति श्शा॒न्ति श्शा॒न्तिः॑ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

विष्णु सूक्ता

(ऋग्वेद, शाकला संहिता, मण्डला १, सूक्ता १५४)

विष्णुसूक्तम्

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि ।
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ॥ १ ॥

प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥ २ ॥

प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षितं उरुगायाय वृष्णे ।
य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरित्पदेभिः ॥ ३ ॥

यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति ।
य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्यामेको दाधार भुवनानि विश्वा ॥ ४ ॥

तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।
उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः ॥ ५ ॥

ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः ।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि ॥ ६ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

पुरुष सूक्त

(ऋग्वेद का पुरुष सूक्ता; मण्डला १०, सूक्ता ९०)

पुरुषसूक्तम्

अथ पुरुषसूक्तम् ॥

ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः सहस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात् ।
स भूमिं॑ वि॒श्वतो॑ वृ॒त्वात्यति॑ष्ठद्दशाङ्गु॒लम् ॥ १ ॥

पुरु॑ष ए॒वेदं सर्वं॒ यद्भू॒तं यच्च॒ भव्य॑म् ।
उ॒तामृ॑त॒त्वस्येशा॑नो॒ यदन्ने॑नाति॒रोह॑ति ॥ २ ॥

ए॒तावा॑नस्य महि॒मातो॒ ज्याया॑ँश्च॒ पूरु॑षः ।
पादो॑ऽस्य॒ विश्वा॑ भू॒तानि॑ त्रि॒पाद॑स्या॒मृतं॑ दि॒वि ॥ ३ ॥

त्रि॒पादू॒र्ध्व उदै॒त्पुरु॑ष॒: पादो॑ऽस्ये॒हाभ॑व॒त्पुन॑: ।
ततो॒ विष्व॒ङ्व्य॑क्रामत्साशनानश॒ने अ॒भि ॥ ४ ॥

तस्मा॑द्वि॒राळ॑जायत वि॒राजो॒ अधि॒ पूरु॑षः ।
स जा॒तो अत्य॑रिच्यत प॒श्चाद्भूमि॒मथो॑ पु॒रः ॥ ५ ॥

यत्पुरु॑षेण ह॒विषा॑ दे॒वा य॒ज्ञमत॑न्वत ।
व॒स॒न्तो अ॑स्यासी॒दाज्यं॑ ग्री॒ष्म इ॒ध्मः श॒रद्ध॒विः ॥ ६ ॥

तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॒ प्रौक्ष॒न्पुरु॑षं जा॒तम॑ग्र॒तः ।
तेन॑ दे॒वा अ॑यजन्त सा॒ध्या ऋष॑यश्च॒ ये ॥ ७ ॥

तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व॒हुत॒: सम्भृ॑तं पृषदा॒ज्यम् ।
प॒शून्ताँश्च॑क्रे वायव्या॑नार॒ण्यान्ग्रा॒म्याश्च॒ ये ॥ ८ ॥

तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व॒हुत॒ ऋच॒: सामा॑नि जज्ञिरे ।
छन्दा॑ंसि जज्ञिरे॒ तस्मा॒द्यजु॒स्तस्मा॑दजायत ॥ ९ ॥

तस्मा॒दश्वा॑ अजायन्त॒ ये के चो॑भ॒यादं॑तः ।
गावो॑ ह जज्ञिरे॒ तस्मा॒त्तस्मा॑ज्जा॒ता अ॑जा॒वय॑: ॥ १० ॥

यत्पुरु॑षं॒ व्यद॑धुः कति॒धा व्य॑कल्पयन् ।
मुख॑ं किम॑स्य॒ कौ बा॒हू का ऊ॒रू पादा॑ उच्येते ॥ ११ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥ १२ ॥

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥ १३ ॥

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥ १४ ॥

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ १६ ॥

॥ अथ शुक्लयजुर्वेदीय पुरुषसूक्तः॥

(यजुर्वेद का पुरुष सूक्ता; वजसनेयि संहिता, अध्याया ३१)

हरिः ॐ ॥
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिꣳ सर्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥

पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ४ ॥

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५ ॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६ ॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

त॒स्मा॒दश्वा॑ अजायन्त॒ ये के चो॑भ॒याद॑तः ।
गावो॑ ह जज्ञिरे॒ त॒स्मा॒त्तस्मा॑ज्जा॒ता अ॑जा॒वयः॑ ॥ ८ ॥

तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॒ प्रौक्ष॒न् पुरु॑षं जा॒तम॑ग्र॒तः ।
तेन॑ दे॒वा अ॑यजन्त सा॒ध्या ऋष॑यश्च॒ ये ॥ ९ ॥

यत्पुरु॑षं॒ व्यद॑धुः कति॒धा व्य॑कल्पयन् ।
मुखं॒ किम॑स्यासीत्किं बा॒हू किमू॒रू पादा॑ उच्येते ॥ १० ॥

ब्रा॒ह्म॒णो॒ऽस्य॒ मुख॑मासीद्बा॒हू रा॑ज॒न्यः॑ कृतः ।
ऊ॒रू तद॑स्य॒ यद्वैश्यः॑ प॒द्भ्याꣳ शू॒द्रो अ॑जायत ॥ ११ ॥

च॒न्द्रमा॒ मन॑सो जा॒तश्चक्षो॒ः सूर्यो॑ अजायत ।
श्रोत्रा॑द्वा॒युश्च॑ प्रा॒णश्च॒ मुखा॑द॒ग्निर॑जायत ॥ १२ ॥

नाभ्या॑ आसीद॒न्तरि॑क्षꣳ शी॒र्ष्णो द्यौः सम॑वर्तत ।
प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिशः॒ श्रोत्रा॒त्तथा॑ लो॒काँ अ॑कल्पयन् ॥ १३ ॥

यत्पुरु॑षेण ह॒विषा॑ दे॒वा य॒ज्ञमत॑न्वत ।
व॒स॒न्तो॒ऽस्यासी॒दाज्यं॑ ग्री॒ष्म इ॒ध्मः श॒रद्ध॒विः ॥ १४॥

स॒प्तास्या॑सन् परि॒धय॒स्त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः ।
दे॒वा यद्य॒ज्ञं त॑न्वा॒ना अब॑ध्न॒न् पुरु॑षं प॒शुम् ॥ १५ ॥

य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वास्तानि॒ धर्मा॑णि प्रथ॒मान्या॑सन् ।
ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानः॑ सचन्त॒ यत्र॒ पूर्वे॑ सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः ॥ १६ ॥

उत्तरनारायणानुवाकः

अ॒द्भ्य सम्भृ॑तः पृथि॒व्यै रसा॑च्च वि॒श्वक॑र्मणः॒ सम॑वर्त्त॒ताग्रे॑ ।
तस्य॒ त्वष्टा॑ वि॒दध॑द्रू॒पमे॑ति॒ तन्मर्त्य॑स्य॒ देव॒त्वमा॒जान॒मग्रे॑ ॥ १७ ॥

वेदा॒हमे॒तं पुरु॑षं म॒हान्त॑मादि॒त्यव॑र्णं॒ तम॑सः॒ प॒रस्ता॑त् ।
तमे॒वं वि॑दि॒त्वाति॑ मृत्युमे॑ति॒ नान्यः पन्था॑ विद्य॒तेऽय॑नाय ॥ १८ ॥

प्र॒जाप॑तिश्चरति॒ गर्भे॑ अ॒न्तरजा॑यमानो बहु॒धा विजा॑यते ।
तस्य॒ योनिं॒ परि॑पश्यन्ति॒ धीरा॒स्तस्मि॑न्ह तस्थु॒र्भुव॑नानि॒ विश्वा॑ ॥ १९ ॥

यो दे॒वेभ्य॑ आ॒तप॑ति॒ यो दे॒वानां॑ पु॒रोहि॑तः ।
पूर्वो॒ यो दे॒वेभ्यो॑जा॒तो नमो॑ रु॒चाय॒ ब्राह्म॑ये ॥ २० ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

रुचं ब्राह्मं जनयंन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् ।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्यं देवा असन्वशें ॥ २१ ॥

ह्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौं अहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णान्निषाणामुं मंनिषाण सर्वलोकं मं इषाण ॥ २२ ॥

इति उत्तरनारायणानुवाकः ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

श्री सूक्ता

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १ ॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं अहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५ ॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तवं वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मिं राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठाम् अलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान् निर्णुद मे गृहात् ॥ ८ ॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरींगुं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥

मनसः काममाकूतिं वाचस्सत्यमंशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥

कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम ।
श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११ ॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
निचं देवीं मातरं श्रियं वासयं मे कुले ॥ १२ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

आ॒र्द्रां पुष्करि॑णीं पुष्टि॒ं सु॒व॒र्णां हे॑म मा॒लिनीम् ।
सू॒र्यां हि॒रण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म॒ आव॑ह ॥ १३ ॥

आ॒र्द्रां य॒ः करि॑णीं य॒ष्टिं पि॒ङ्गळां प॑द्ममा॒लिनीम् ।
च॒न्द्रां हि॒रण्म॑यीं लक्ष्मीं जात॑वेदो म॒ आव॑ह ॥ १४ ॥

तां म॒ आव॑ह॒ जात॑वेदो ल॒क्ष्मीम॑नपगा॒मिनी᳚म् ।
प्रभू॑त॒ं गावो᳚ दा॒स्योऽश्वा᳚न् वि॒न्देय॒ं पुरु॑षान॒हम् ॥ १५ ॥

यः शुचि॒ः प्रय॑तो भू॒त्वा जु॒हुया॑दाज्य॒मन्व॑हम् ।
सूक्तं॑ प॒ञ्चद॑शर्च॒ं च श्री॒ काम॑ं सत॒तं ज॑पेत् ॥ १६ ॥

पद्म॑प्रिये पद्मिनि पद्म॒हस्ते पद्मा॑लये पद्मदलाय॑ताक्षि ।
विश्व॑प्रिये॒ विष्णु मनो᳚ऽनुकू॒ले त्वत्पा॑द प॒द्मं मयि॒ सन्नि॑धत्स्व ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

देवि सूक्ता

(ऋग्वेद, शाकला संहिता, मण्डला १०, सूक्ता १२५)

देवीसूक्तम्

अ॒हं रु॒द्रेभि॒र्वसु॑भिश्चराम्य॒हमा॑दि॒त्यैरु॒त वि॒श्वदे॑वैः ।
अ॒हं मि॒त्रावरु॑णो॒भा बि॑भर्म्य॒हमिन्द्रा॒ग्नी अ॒हम॒श्विनो॒भा ॥ १ ॥

अ॒हं सोम॑माह॒नसं॑ बिभर्म्य॒हं त्वष्टा॑रमु॒त पू॒षणं॒ भग॑म् ।
अ॒हं द॑धामि॒ द्रवि॑णं ह॒विष्म॑ते सुप्रा॒व्ये॒३॒॑ यज॑मानाय सुन्व॒ते ॥ २ ॥

अ॒हं राष्ट्री॑ सं॒गम॑नी॒ वसू॑नां चिकि॒तुषी॑ प्रथ॒मा य॒ज्ञिया॑नाम् ।
तां मा॑ दे॒वा व्य॑दधुः पुरु॒त्रा भूरि॑स्थात्रां॒ भूर्या॑वे॒शय॑न्तीम् ॥ ३ ॥

मया॒ सो अन्न॑मत्ति॒ यो वि॒पश्य॑ति॒ यः प्राणि॑ति॒ य ई॑ शृ॒णोत्यु॒क्तम् ।
अ॒म॒न्त॒वो॒ मां त उप॑ क्षियन्ति श्रु॒धि श्रु॑त श्रद्धि॒वं ते॑ वदामि ॥ ४ ॥

अ॒हमे॒व स्व॒यमि॒दं व॑दामि॒ जुष्टं॑ दे॒वेभि॑रु॒त मानु॑षेभिः ।
यं का॒मये॒ तं॑तमु॒ग्रं कृ॑णोमि॒ तं ब्र॒ह्माणं॒ तमृषिं॒ तं सु॑मे॒धाम् ॥ ५ ॥

अ॒हं रु॒द्राय॒ धनु॒रा त॑नोमि ब्रह्म॒द्विषे॒ शर॑वे॒ हन्त॒वा उ॑ ।
अ॒हं जना॑य स॒मदं॑ कृणोम्य॒हं द्यावा॑पृथि॒वी आ वि॑वेश ॥ ६ ॥

अ॒हं सु॑वे पि॒तर॑मस्य मू॒र्धन्मम॒ योनि॑र॒प्स्व॑न्तः स॑मु॒द्रे ।
ततो॒ वि ति॑ष्ठे भुव॒नानु॒ विश्वो॒तामूं द्यां व॒र्ष्मणोप॑ स्पृशामि ॥ ७ ॥

अ॒हमे॒व वात॑ इव॒ प्र वा॑म्या॒रभ॑माणा॒ भुव॑नानि॒ विश्वा॑ ।
प॒रो दि॒वा प॒र ए॒ना पृ॑थि॒व्यैतावं॑ती महि॒ना सं ब॑भूव ॥ ८ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

मन्यु सूक्ता

(ऋग्वेद, शाकला संहिता, मण्डला १०, सूक्तों ८३-८४)

मन्युसूक्तम्

(सूक्त ८३)

यस्तें मन्योऽविधद्वज्र सायक सह ओजः पुष्यति विश्वंमानुषक् ।
साह्याम दासमार्यं त्वया युजा सहस्कृतेन सहसा सहस्वता ॥ १ ॥

मन्युरिन्द्रों मन्युरेवासं देवो मन्युर्होता वरुणो जातवेदाः ।
मन्युं विशं ईळते मानुषीर्याः पाहि नों मन्यो तपसा सजोषाः ॥ २ ॥

अभीहि मन्यो तवस्तवीयान्तपसा युजा वि जंहि शत्रूंन् ।
अमित्रहा वृत्रहा दस्युहा च विश्वा वसून्या भंरा त्वं नंः ॥ ३ ॥

त्वं हि मंन्यो अभिभूत्योजाः स्वयम्भूर्भामों अभिमातिषाहः ।
विश्वचर्षणिः सहुरिः सहावानस्मास्वोजः पृतंनासु धेहि ॥ ४ ॥

अभागः सन्नप परेंतो अस्मि तव क्रत्वा तविषस्यं प्रचेतः ।
तं त्वा मन्यो अक्रतुर्जिहीळाहं स्वा तनूर्बलदेयायं मेहिं ॥ ५ ॥

अयं तें अस्म्युप मेह्यर्वाङ्प्रंतीचीनः संहुरे विश्वधायः ।
मन्यों वज्रिन्नभि मामा ववृत्स्व हनावं दस्यूँरुत बोंध्यापेः ॥ ६ ॥

अभि प्रेहिं दक्षिणतो भंवा मेऽधां वृत्राणिं जङ्घनाव भूरिं ।
जुहोमिं ते धरुणं मध्वो अग्रंमुभा उंपांशु प्रंथमा पिंबाव ॥ ७ ॥

(सूक्त ८४)

त्वया मन्यो सरथंमारुजन्तो हर्षंमाणासो धृषिता मंरुत्वः ।
तिग्मेषंव आयुंधा संशिशांना अभि प्र यंन्तु नरों अग्निरूंपाः ॥ ८ ॥

अग्निरिंव मन्यो त्विषितः संहस्व सेनानीर्नः सहुरे हूत एंधि ।
हत्वाय शत्रून्वि भंजस्व वेद ओजो मिमांनो वि मृधों नुदस्व ॥ ९ ॥

सहंस्व मन्यो अभिमांतिमस्मे रुजन्मृणन्प्रंमृणन्प्रेहि शत्रूंन् ।
उग्रं ते पाजों नन्वा रुंरुध्रे वशी वशं नयस एकज त्वम् ॥ १० ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

एको॑ बहू॒नाम॑सि मन्यवीळि॒तो विशं॑विशं यु॒धये॒ सं शि॑शाधि ।
अकृ॑त्तरु॒क्त्वया॑ यु॒जा व॒यं द्यु॒मन्तं॒ घोषं॑ विज॒याय॑ कृण्महे ॥ ११ ॥

वि॒जे॒ष॒कृदिन्द्र॑ इवानवब्र॒वो॒॑ऽस्माकं॑ मन्यो अधि॒पा भ॑वे॒ह ।
प्रि॒यं ते॒ नाम॑ सहुरे गृणीमसि वि॒द्मा तमुत्सं॒ यत॑ आब॒भूथ॑ ॥ १२ ॥

आभू॑त्या सह॒जा व॑ज्र सायक॒ सहो॑ बिभर्ष्यभिभूत॒ उत्त॑रम् ।
क्रत्वा॑ नो मन्यो स॒ह मे॒द्ये॑धि महाध॒नस्य॑ पुरुहूत सं॒सृजि॑ ॥ १३ ॥

संसृ॑ष्टं॒ धन॑मु॒भयं॑ स॒माकृ॑तम॒स्मभ्यं॑ दत्तां॒ वरु॑णश्च म॒न्युः ।
भियं॒ दधा॑ना॒ हृद॑येषु॒ शत्र॑वः॒ परा॑जितासो॒ अप॒ नि ल॑यन्ताम् ॥ १४ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

बळित्थासूक्ता

(ऋग्वेद, शाकला संहिता, मण्डला १, सूक्ता १४१)

बळित्थासूक्तम्

बळि॒त्था तद्वपु॑षे धायि दर्श॒तं दे॒वस्य॒ भर्ग॒: सह॑सो॒ यतो॒ जनि॑ ।
यदी॒मुप॒ ह्वर॑ते॒ साध॑ते म॒तिर्ऋ॒तस्य॒ धेना॑ अनयन्त स॒स्रुत॑: ॥ १ ॥

पृ॒क्षो वपु॑: पि॒तुमा॒न्नित्य॒ आ श॑ये द्वि॒तीय॒मा स॒प्तशि॑वासु मा॒तृषु॑ ।
तृ॒तीय॑मस्य वृष॒भस्य॑ दो॒हसे॒ दश॑प्रमतिं जनयन्त॒ योष॑णः ॥ २ ॥

निर्यदीं॑ बु॒ध्नान्म॑हि॒षस्य॒ वर्प॑स ईशा॒नास॒: शव॑सा॒ क्रन्त॑ सू॒रय॑: ।
यदी॒मनु॑ प्र॒दिवो॒ मध्व॑ आध॒वे गुहा॒ सन्त॑ मात॒रिश्वा॑ मथा॒यति॑ ॥ ३ ॥

प्र यत्पि॒तुः प॑र॒मान्नी॒यते॒ पर्या पृ॒क्षुधो॑ वी॒रुधो॒ द॑सु॒ रोहति ।
उ॒भा यद॑स्य ज॒नुष॒ं यदिन्व॑त॒ आदिद्यवि॑ष्ठो अभवद्घृ॒णा शुचि॑: ॥ ४ ॥

आदिन्मा॒तृरावि॑श॒द्यास्वा शुचि॒रहिं॑स्यमान उर्वि॒या वि वा॑वृधे ।
अनु॒ यत्पूर्वा॒ अरु॑हत्सना॒जुवो॒ नि नव्य॑सी॒ष्ववं॑रासु धावते ॥ ५ ॥

आदिद्धोता॑रं वृणते॒ दिवि॑ष्टिषु॒ भग॑मिव पपृचा॒नास॑ ऋञ्जते ।
दे॒वान्यत्क्रत्वा॑ म॒ज्मना॑ पुरुष्टु॒तो मर्त॒ं शंस॑ वि॒श्वधा॒ वेति॒ धाय॑से ॥ ६ ॥

वि यदस्था॑द्यज॒तो वात॑चोदितो ह्वा॒रो न वक्वा॑ ज॒रणा॒ अना॑कृतः ।
तस्य॒ पत्म॑न्द॒क्षुष॑: कृ॒ष्णजं॑हस॒: शुचि॑जन्मनो॒ रज॒ आ व्य॑ध्वनः ॥ ७ ॥

रथो॒ न या॒तः शिक्व॑भिः कृ॒तो द्यामङ्गे॑भिररु॒षेभि॑रीयते ।
आद॑स्य॒ ते कृ॒ष्णासो॑ दक्षि सू॒रय॒: शूर॑स्येव त्वे॒षथा॑दीषते॒ वय॑: ॥ ८ ॥

त्वया॒ ह्य॑ग्ने॒ वरु॑णो धृ॒तव्र॑तो मि॒त्रः शा॑श॒द्रे अ॑र्य॒मा सु॒दान॑वः ।
यत्सी॒मनु॒ क्रतु॑ना वि॒श्वथा॑ वि॒भुर॒रान्न ने॒मिः प॑रि॒भूरजा॑यथाः ॥ ९ ॥

त्वम॑ग्ने शशमा॒नाय॑ सुन्व॒ते रत्न॑ यविष्ठ दे॒वता॑तिमिन्वसि ।
तं त्वा॒ नु नव्य॑ सहसो युवन्व॒यं भग॒ं न का॒रे म॑हिरत्न धीमहि ॥ १० ॥

अ॒स्मे र॒यिं न स्वर्थ॒ं दमू॑नस॒ं भग॒ं दक्ष॒ं न प॑पृचासि धर्ण॒सिम् ।
र॒श्मीँरि॑व॒ यो यम॑ति॒ जन्म॑नी उ॒भे दे॒वाना॒ं शंस॑मृ॒त आ च॑ सु॒क्रतु॑: ॥ ११ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

उ॒त नः॑ सु॒द्योत्मा॑ जी॒राश्वो॒ होता॑ म॒न्द्रः शृ॑णवच्च॒न्द्ररः॑थः ।
स नो॑ नेष॒न्नेष॑तमै॒रमू॑रो॒ऽग्निर्वा॒मं सु॑वि॒तं वस्यो॒ अच्छ॑ ॥ १२ ॥

अस्ता॑व्य॒ग्निः शिमी॑वद्भिर॒र्कैः साम्रा॑ज्याय प्रत॒रं दधा॑नः ।
अ॒मी च॒ ये म॒घवा॑नो व॒यं च॒ मिहं॒ न सूरो॒ अति॒ निष्ट॑तन्युः ॥ १३ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

३. श्री मध्वाचार्या का द्वादशा स्तोत्रों

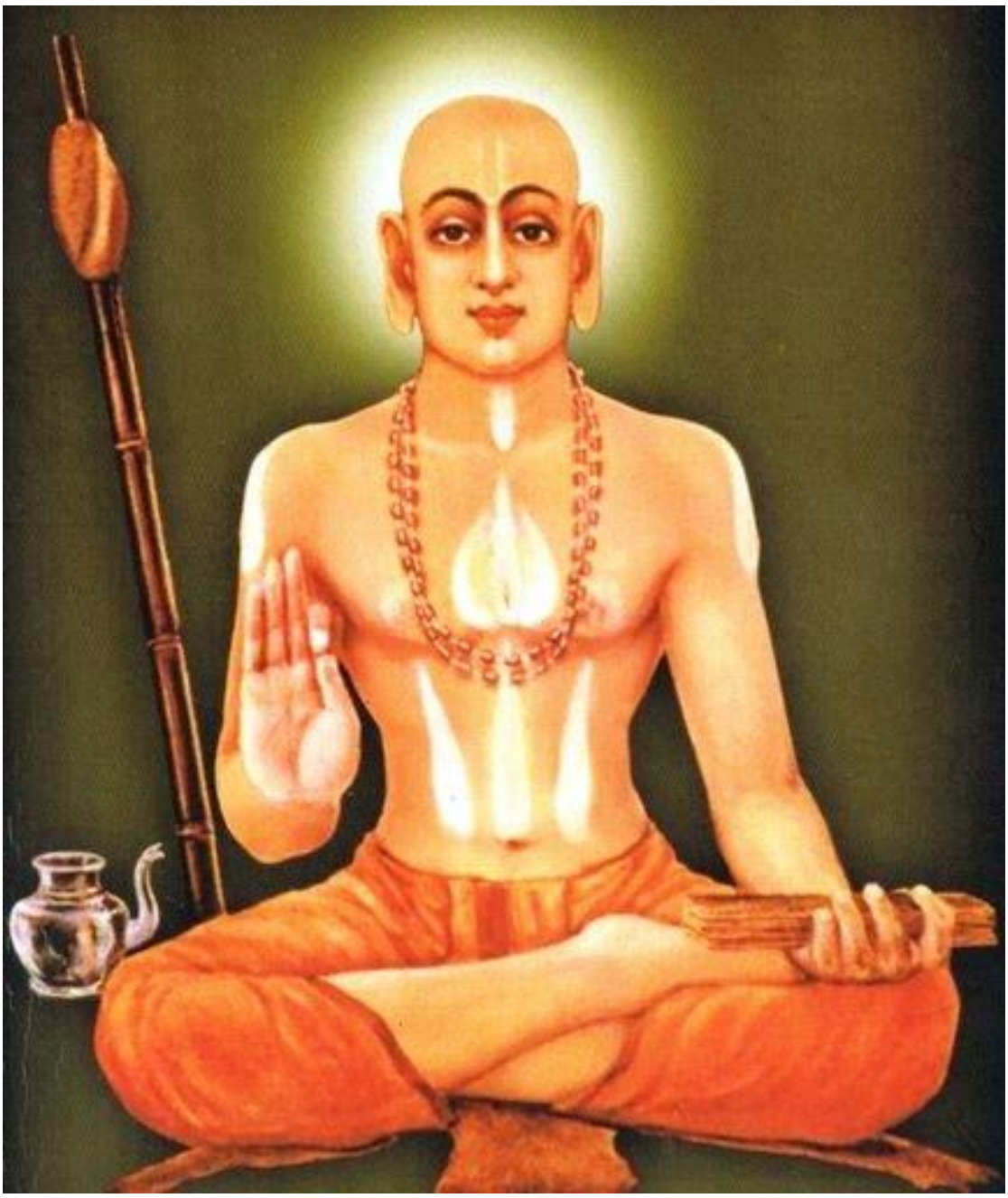

परिचय

द्वादशा स्तोत्रों श्री मध्वाचार्या से रचित हुए १२ स्तोत्रों है और श्री लक्ष्मी नारायणा का महत्व का विवरण करते है. बोहोत समय तक द्वआदशा स्तोत्रों का केवल एक पाठ सब को मालुम था. लेकिन अब, श्रीमत आचार्या का सर्वमूल ग्रन्थों का 700 वर्शो का हस्तलिपि मिला, जिस्को श्री हृषीकेश तीर्थ ने लिखा था. इस्मे द्वादशा स्तोत्रों मे एक और स्तोत्र भी है और यहा तीसरा स्तोत्र है. इस स्तोत्र का अन्त मे २ गायत्रि छन्दसों है, जो डेढ़ अनुष्टुप

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

छन्दों का समान है. एक अनुष्टुप छन्दस मे ३२ अक्षरों होते है और एक गायत्रि छन्दस मे २४ अक्षरों होते है. इस स्तोत्र का पूर्ण पाठ श्री रघुप्रिया तीर्था और श्री रघुरत्न तीर्था का ३०० और १५० साल पुराने हस्तलिपियों से मिला.

इस स्तोत्र मे क्लिष्ट पद प्रयोगा भी है, जो जटिल शब्दो का उपयोग है. इस्को समझने केलिये शास्त्रों का अच्चा ज्ञान आवश्यक है. दूसरे द्वादशा स्तोत्रोमे ऐसा नहि है और उन्मे सुललिता पदा प्रयोगा है. जिन्को संस्कृ भाषा का ज्ञान है, येह स्तोत्रों को समझने मे कठिनाई नहि होगा. इस स्तोत्र मै श्री नारायणा का रूपों का विवरण है और इस्से पूर्ण रूप मे समझ ने केलिये, तन्त्रसारा सङ्ग्रहा का ज्ञान भी अवश्य है. श्री हृषीकेश तीर्था का द्वादशा स्तोत्रों का हस्तलिपि मे २ स्तोत्रों एक संयुक्त भी हो चुके है. श्री नृसिंहा नखा स्तुति, जो पेहले एक अन्य सर्वमूला ग्रन्थ समझ गया था, द्वादशा स्तोत्रों मे पांचवां स्तोत्र है.

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

॥ द्वादश स्तोत्राणि ॥

अथ प्रथमस्तोत्रम् (श्रीस्तुतिः)

विश्वस्थितिप्रळयसर्ग्गमहाविभूति वृत्तिप्रकाशनियमावृति बन्धमोक्षाः ।
यस्या अपाङ्गलवमात्रत ऊर्जिता सा श्रीर्यत्कटाक्षबलवत्यजितं नमामि ॥ १ ॥

ब्रह्मेशशक्ररविधर्मशशाङ्कपूर्व गीर्वाणसन्ततिरियं यदपाङ्गलेशम् ।
आश्रित्य विश्वविजयं विसृजत्यचिन्त्या श्रीर्यत्कटाक्षबलवत्यजितं नमामि ॥ २ ॥

धर्मार्थकामसुमतिप्रचयाद्यशेषसन्मङ्गलं विदधते यदपाङ्गलेशम् ।
आश्रित्य तत्प्रणतसत्प्रणता अपीड्या श्रीर्यत्कटाक्षबलवत्यजितं नमामि ॥ ३ ॥

षड्वर्गनिग्रहनिरस्तसमस्तदोषा ध्यायन्ति विष्णुमृषयो यदपाङ्गलेशम् ।
आश्रित्य यानपि समेत्य न याति दुःखं श्रीर्यत्कटाक्षबलवत्यजितं नमामि ॥ ४ ॥

शेषाहिवैरिशिवशक्रमनुप्रधान चित्रोरुकर्मरचनं यदपाङ्गलेशम् ।
आश्रित्य विश्वमखिलं विदधाति धाता श्रीर्यत्कटाक्षबलवत्यजितं नमामि ॥ ५ ॥

शक्रोग्रदीधितिहिमाकरसूर्यसूनु पूर्वं निहत्य निखिलं यदपाङ्गलेशम् ।
आश्रित्य नृत्यति शिवः प्रकटोरुशक्तिः श्रीर्यत्कटाक्षबलवत्यजितं नमामि ॥ ६ ॥

तत्पादपङ्कजमहासनतामवाप शर्वादिवन्द्यचरणो यदपाङ्गलेशम् ।
आश्रित्य नागपतिः अन्यसुरैर्दुरापां श्रीर्यत्कटाक्षबलवत्यजितं नमामि ॥ ७ ॥

नागारिरुग्रबलपौरुष आप विष्णुवाहत्वमुत्तमजवो यदपाङ्गलेशम् ।
आश्रित्य शक्रमुखदेवगणैः अचिन्त्यं श्रीर्यत्कटाक्षबलवत्यजितं नमामि ॥ ८ ॥

आनन्दतीर्थमुनिसन्मुखपङ्कजोत्थं साक्षाद्रमाहरिमनः प्रियमुत्तमार्थम् ।
भक्त्या पठत्यजितमात्मनि सन्निधाय यः स्तोत्रमेतभियाति तयोरभीष्टम् ॥ ९ ॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्यकृता श्रीस्तुतिः समाप्ता ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

अथ द्वितीयस्तोत्रम्

वन्दे वन्द्यं सदानन्दं वासुदेवं निरञ्जनम् ।
इन्दिरापतिमाद्यादि वरदेश वरप्रदम् ॥ १ ॥

नमामि निखिलाधीश किरीटाघृष्टपीठवत् ।
हृत्तमश्शमनेऽर्काभं श्रीपतेः पादपङ्कजम् ॥ २ ॥

जाम्बूनदाम्बराधारं नितम्बं चिन्त्यमीशितुः ।
स्वर्णमञ्जीरसंवीतं आरूढं जगदम्बया ॥ ३ ॥

उदरं चिन्त्यं ईशस्य तनुत्वेऽपि अखिलम्भरम् ।
वलित्रयाङ्कितं नित्यं आरूढं श्रियैकया ॥ ४ ॥

स्मरणीयमुरो विष्णोरिन्दिरावासमुत्तमैः ।
अनन्तं अन्तवदिव भुजयोरन्तरङ्गतम् ॥ ५ ॥

शङ्खचक्रगदापद्मधराश्चिन्त्या हरेर्भुजाः ।
पीनवृत्ता जगद्रक्षा केवलोद्योगिनोऽनिशम् ॥ ६ ॥

सन्ततं चिन्तयेत्कण्ठं भास्वत्कौस्तुभभासकम् ।
वैकुण्ठस्याखिला वेदा उद्गीर्यन्तेऽनिशं यतः ॥ ७ ॥

स्मरेत यामिनीनाथ सहस्रामितकान्तिमत् ।
भवतापापनोदीड्यं श्रीपतेः मुखपङ्कजम् ॥ ८ ॥

पूर्णानन्यसुखोद्भासिं अन्दस्मितमधीशितुः ।
गोविन्दस्य सदा चिन्त्यं नित्यानन्दपदप्रदम् ॥ ९ ॥

स्मरामि भवसन्ताप हानिदामृतसागरम् ।
पूर्णानन्दस्य रामस्य सानुरागावलोकनम् ॥ १० ॥

ध्यायेदजस्रमीशस्य पद्मजादिप्रतीक्षितम् ।
भ्रूभङ्गं पारमेष्ठ्यादि पददायि विमुक्तिदम् ॥ ११ ॥

सन्ततं चिन्तयेऽनन्तमन्तकाले विशेषतः ।
नैवोदापुः गृणन्तोऽन्तं यद्गुणानां अजादयः ॥ १२ ॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्य विरचितं द्वादशस्तोत्रेषु द्वितीयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

अथ तृतीयस्तोत्रम्

शङ्खचक्रगदापद्मशार्ङ्गखड्गधरं सदा ।
नमामि पितरं नित्य वासुदेवं जगत् पतिम् ॥ १ ॥

सच्चिदानन्दरूपं तमनामयमनन्तरम् ।
एकमेकान्तमभयं विष्णुं विश्वहृदि स्थितम् ॥ २ ॥

नानास्वभावमत्यन्तस्वभावेन विचारितम् ।
अविशेषमनाद्यन्तं प्रणमामि सनातनम् ॥ ३ ॥

कुन्देन्दुसन्निभं वन्दे सुधारसनिभं विभुम् ।
ज्ञानमुद्रापुस्तकारिशङ्खाक्षायुधधारिणम् ॥ ४ ॥

आनन्दमजरं नित्यमात्मेशममितद्युतिम् ।
वन्दे विश्वस्य पितरं विष्णुं विश्वेश्वरं सदा ॥ ५ ॥

अमन्दानन्दसन्दोहसन्तोषितजगत्रयम् ।
नारायणमणीयांसं वन्दे देवं सदातनम् ॥ ६ ॥

सूर्यमण्डलमद्ध्यस्थं वराभयकरोद्यतम् ।
सूर्यामितद्युतिं वन्दे नारायणमनामयम् ॥ ७ ॥

विश्वं विश्वाकरं वन्दे विश्वस्य प्रपितामहम् ।
नानारूपमजं नित्यं विश्वात्मानं प्रजापतिम् ॥ ८ ॥

कालाकालविचारादिप्रकालितसदातनम् ।
पुरुषं प्रकृतिस्थं च वन्दे विष्णुमजोत्तमम् ॥ ९ ॥

ब्रह्मणः पितरं वन्दे शङ्करस्य पितामहम् ।
श्रियः पतिमजं नित्यमिन्द्रादिप्रपितामहम् ॥ १० ॥

प्रतिप्रति स्थितं विष्णुं नित्यामृतमनामयम् ।
शङ्खचक्रधरं वन्दे वराभयकरोद्यतम् ॥ ११ ॥

प्रतापप्रविशेषेण दूरीकृतविदूषणम् ।
विदारितारिमत्यन्तप्रसन्नं प्रणमाम्यहम् ॥ १२ ॥

अप्रमेयमजं नित्यं विशालममृतं परम् ।
कृतनित्यालयं लोके नमस्यामि जगत् पतिम् ॥ १३ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

सुनित्यसुखमक्षय्यं शुद्धं शान्तं निरञ्जनम् ।
लोकालोकविचाराढ्यं नमस्यामि श्रियःपतिम् ॥ १४ ॥

अमन्दानन्दसन्दोहसान्द्रमिन्द्रानुजं परम् ।
नित्यावदातमेकान्तं प्रमाणातीतमक्षयम् ।
लोकालोकपतिं दिव्यं नमस्यामि रमापतिम् ॥ १५ ॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्यविरचितं द्वादशस्तोत्रेषु तृतीयस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

अथ चतुर्थस्तोत्रम् (हरिस्तुतिः)

कुरु भुङ्क्ष्व च कर्म निजं नियतं हरिपादविनम्रधिया सततम् ।
हरिरेव परो हरिरेव गुरुः हरिरेव जगत्पितृमातृगतिः ॥ १ ॥

न ततोऽस्त्यपरं जगदीड्यतमं जगतीड्यतमं परमात्परतः पुरुषोत्तमतः ।
तदलं बहुलोकविचिन्तनया प्रवणं कुरु मानसमीशपदे ॥ २ ॥

यततोऽपि हरेः पदसंस्मरणे सकलं ह्यघमाशु लयं व्रजति ।
स्मरतस्तु विमुक्तिपदं परमं स्फुटमेष्यति तत्किमपाक्रियते ॥ ३ ॥

शृणुतामलसत्यवचः परमं शपथेरितं उच्छ्रितबाहुयुगम् ।
न हरेः परमो न हरेः सदृशः परमः स तु सर्व चिदात्मगणात् ॥ ४ ॥

यदि नाम परो न भवेत हरिः कथमस्य वशे जगदेतदभूत् ।
यदि नाम न तस्य वशे सकलं कथमेव तु नित्यसुखं न भवेत् ॥ ५ ॥

न च कर्मविमामल कालगुणप्रभृतीशमचित्तनु तद्धि यतः ।
चिदचित्तनु सर्वमसौ तु हरिर्यमयेदिति वैदिकमस्ति वचः ॥ ६ ॥

व्यवहारभिदाऽपि गुरोर्जगतां न तु चित्तगता स हि चोद्यपरम् ।
बहवः पुरुषाः पुरुषप्रवरो हरिरित्यवदत्स्वयमेव हरिः ॥ ७ ॥

चतुराननपूर्वविमुक्तगणा हरिमेत्य तु पूर्ववदेव सदा ।
नियतोच्चविनीचतयैव निजां स्थितिमापुरिति स्म परं वचनम् ॥ ८ ॥

आनन्दतीर्थसन्नाम्ना पूर्णप्रज्ञाभिधायुजा ।
कृतं हर्यष्टकं भक्त्या पठतः प्रीयते हरिः ॥ ९ ॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्य विरचितं द्वादशस्तोत्रेषु चतुर्थस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

[हरिस्तुतिः समाप्ता ।]

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

श्री नृसिंह नख स्तुति

अथ पञ्चमस्तोत्रम् (श्रीनृसिंहनखरस्तुतिः)

ॐ ॥ रामोऽखिलानन्दतनुः स एव भीमोऽतिपापेषु दुरन्तवीर्यः ।
कामः स एवाजितकामिनीषु सोमः स एवाऽत्मपदाश्रितेषु ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

पान्त्वस्मान्
पुरुहूतवैरिबलवन्मातङ्गमाद्यद्घटाकुम्भोच्चाद्रिविपाटनाधिकपटुप्रत्येकवज्रायिताः ।
श्रीमत्कण्ठीरवास्यप्रततसुनखरा दारितारातिदूर प्रध्वस्तध्वान्तशान्तप्रविततमनसा भाविता भूरिभागैः ॥ १ ॥

लक्ष्मीकान्त समन्ततोऽपि कलयन् नैवेशितुस्ते समं पश्याम्युत्तमवस्तु दूरतरतोऽपास्तं रसो योऽष्टमः ।
यद्रोषोत्करदक्षनेत्रकुटिलप्रान्तोत्थिताग्निस्फुरत्खद्योतोपमविस्फुलिङ्गभसिता ब्रह्मेशशक्रोत्कराः ॥ २ ॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्यकृता श्रीनृसिंहनखरस्तुतिः समाप्ता ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

अथ षष्ठस्तोत्रम्

वन्दिताशेषवन्द्योरुवृन्दारकं चन्दनाचर्चितोदारपीनांसकम् ।
इन्दिराचञ्चलापाङ्गनीराजितं मन्दरोद्धारिवृत्तोद्भुजाभोगिनम् ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ १ ॥

सृष्टिसंहारलीलाविलासाततं पुष्टषाड्गुण्यसद्विग्रहोल्लासिनम् ।
दुष्टनिःशेषसंहारकर्मोद्यतं हृष्टपुष्टातिशिष्ट प्रजासंश्रयम् ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ २ ॥

उन्नतप्रार्थिताशेषसंसाधकं सन्नतालौकिकानन्ददश्रीपदम् ।
भिन्नकर्माशयप्राणिसम्प्रेरकं तन्न किं नेति विद्वत्सु मीमांसितम् ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ३ ॥

विप्रमुख्यैः सदा वेदवादोन्मुखैः सुप्रतापैः क्षितीशेश्वरैश्चार्च्चितम् ।
अप्रतर्क्योरुसंविद्गुणं निर्मलं सप्रकाशाजरानन्दरूपं परम् ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ४ ॥

अत्ययो यस्य केनापि न क्वापि हि प्रत्ययो यद्गुणेषूत्तमानां परः ।
सत्यसङ्कल्प एको वरेण्यो वशी मत्यनूनैः सदा वेदवादोदितः ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ५ ॥

पश्यतां दुःखसन्ताननिर्मूलनं दृश्यतां दृश्यतामित्यजेशार्चितम् ।
नश्यतां दूरगं सर्वदाप्याऽत्मगं वश्यतां स्वेच्छया सज्जनेष्वागतम् ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ६ ॥

अग्रजं यः ससर्जाजमग्र्याकृतिं विग्रहो यस्य सर्वे गुणा एव हि ।
उग्र आद्योऽपि यस्यात्मजाग्र्यात्मजः सद्गृहीतः सदा यः परं दैवतम् ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ७ ॥

अच्युतो यो गुणैर्नित्यमेवाखिलैः प्रच्युतोऽशेषदोषैः सदा पूर्तितः ।
उच्यते सर्ववेदोरुवादैरजः स्वर्चितो ब्रह्मरुद्रेन्द्रपूर्वैः सदा ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ८ ॥

धार्यते येन विश्वं सदाजादिकं वार्यतेऽशेषदुःखं निजध्यायिनाम् ।
पार्यते सर्वमन्यैर्नयत्पार्यते कार्यते चाखिलं सर्वभूतैः सदा ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ९ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

सर्वपापानियत्संस्मृतेः सङ्क्षयं सर्वदा यान्ति भक्त्या विशुद्धात्मनाम् ।
शर्वगुर्वादिगीर्वाण संस्थानदः कुर्वते कर्म यत्प्रीतये सज्जनाः ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ १० ॥

अक्षयं कर्म यस्मिन् परे स्वर्पितं प्रक्षयं यान्ति दुःखानि यन्नामतः ।
अक्षरो योऽजरः सर्वदैवामृतः कुक्षिगं यस्य विश्वं सदाऽजादिकम् ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ ११ ॥

नन्दितीर्थोरुसन्नामिनो नन्दिनः सन्दधानाः सदानन्ददेवे मतिम् ।
मन्दहासारुणा पाङ्गदत्तोन्नतिं वन्दिताशेषदेवादिवृन्दं सदा ।
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामण्डलाखण्डमण्डनं प्रीणयामो वासुदेवम् ॥ १२ ॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्य विरचितं द्वादशस्तोत्रेषु षष्ठस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

अथ सप्तमस्तोत्रम्

देवकिनन्दन नन्दकुमारा वृन्दावनाञ्चन गोकुलचन्द्र ॥ १ ॥

कन्दफलाशन सुन्दररूपा नन्दितगोकुल वन्दितपाद ॥ २ ॥

इन्द्रसुतावक नन्दकहस्ता चन्दनचर्च्चित सुन्दरिनाथ ॥ ३ ॥

इन्दीवरोदरदळनयनाऽऽ मन्दरधारा गोविन्द वन्दे ॥ ४ ॥

मत्स्यकरूप लयोदविहारिन् वेदविनेत्र चतुर्मुखवन्द्य ॥ ५ ॥

कूर्मस्वरूपक मन्दरधारिन् लोकविधारक देववरेण्य ॥ ६ ॥

सूकररूपक दानवशत्रो भूमिविधारक यज्ञावराङ्ग ॥ ७ ॥

देव नृसिंह हिरण्यकशत्रो सर्व भयान्तक दैवतबन्धो ॥ ८ ॥

वामन वामन माणववेष दैत्यवरान्तक कारणभूत ॥ ९ ॥

रामभृगूद्वह सूर्जितदीप्ते क्षत्रकुलान्तक शम्भुवरेण्य ॥ १० ॥

राघव राघव राक्षसशत्रो मारुतिवल्लभ जानकिकान्त ॥ ११ ॥

देवकिनन्दन सुन्दररूप रुक्मिणिवल्लभ पाण्डवबन्धो ॥ १२ ॥

दैत्यविमोहक नित्यसुखादे देवविबोधक बुद्धस्वरूप ॥ १३ ॥

दुष्टकुलान्तक कल्किस्वरूपा धर्मविवर्धन मूलयुगादे ॥ १४ ॥

आनन्दतीर्थकृता हरिगाथा पापहरा शुभनित्यसुखार्था ॥ १५ ॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्य विरचितं द्वादशस्तोत्रेषु सप्तमस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

अथ अष्टमस्तोत्रं

अतिमततमोगिरिसमितिविभेदन पितामहभूतिद गुणगणनिलय ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ १ ॥

विधिभवमुखसुरसततसुवन्दितरमामनोवल्लभ भव मम शरणम् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ २ ॥

अगणितगुणगणमयशरीर हे विगतगुणेतर भव मम शरणम् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ ३ ॥

अपरिमितसुखनिधिविमलसुदेह हे विगत सुखेतर भव मम शरणम् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ ४ ॥

प्रचलितलयजलविहरण शाश्वतसुखमयमीन हे भव मम शरणम् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ ५ ॥

सुरदितिजसुबलविलुळितमन्दरधर पर कूर्म हे भव मम शरणम् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ ६ ॥

सगिरिवरधरातळवह सुसूकरपरमविबोध हे भव मम शरणम् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ ७ ॥

अतिबलदितिसुत हृदय विभेदन जयनृहरेऽमल भव मम शरणम् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ ८ ॥

बलिमुखदितिसुतविजयविनाशन जगदवनाजित भव मम शरणम् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ ९ ॥

अविजितकुनृपतिसमितिविखण्डन रमावर वीरप भव मम शरणम् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ १० ॥

खरतरनिशिचरदहन परामृत रघुवर मानद भव मम शरणम् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ ११ ॥

सुललिततनुवर वरद महाबल यदुवर पार्थप भव मम शरणम् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ १२ ॥

दितिसुतविमोहन विमलविबोधन परगुणबुद्ध हे भव मम शरणम् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ १३ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

कलिमलहुतवह सुभग महोत्सव शरणद कल्कीश भव मम शरणम् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ १४ ॥

अखिलजनिविलय परसुखकारण परपुरुषोत्तम भव मम शरणम् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ १५ ॥

इति तव नुतिवरसततरतेर्भव सुशरणमुरुसुखतीर्थमुनेः भगवन् ।
शुभतम कथाशय परमसदोदित जगदेककारण रामरमारमण ॥ १६ ॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्य विरचितं द्वादशस्तोत्रेषु अष्टमस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

अथ नवमस्तोत्रम्

केशव केशव शासक वन्दे पाशधरार्चित शूरपरेश ।
नारायणामलतारण वन्दे कारणकारण पूर्ण वरेण्य ॥ १ ॥

माधव माधव शोधक वन्दे बाधक बोधक शुद्धसमाधे ।
गोविन्द गोविन्द पुरन्दर वन्दे स्कन्दसनन्दनवन्दितपाद ॥ २ ॥

विष्णु सृजिष्णु ग्रसिष्णो विवन्दे कृष्ण सदुष्णवधिष्णो सुधृष्णो ।
मधुसूदन दानवसादन वन्दे दैवतमोदन वेदितपाद ॥ ३ ॥

त्रिविक्रम निष्क्रम विक्रम वन्दे सुक्रम सङ्क्रमहुङ्कृतवक्त्र ।
वामन वामन भामन वन्दे सामन सीमन शामन सानो ॥ ४ ॥

श्रीधर श्रीधर शन्धर वन्दे भूर्द्धर वार्द्धर कन्धरधारिन् ।
हृषीकेश सुकेश परेश विवन्दे शरणेश कलेश बलेश सुखेश ॥ ५ ॥

पद्मनाभ शुभोद्भव वन्दे सम्भृतलोकभराभर भूरे ।
दामोदर दूरतरान्तर वन्दे दारितपारक पार परस्मात् ॥ ६ ॥

आनन्दसुतीर्थ मुनीन्द्रकृता हरिगीतिरियं परमादरतः ।
परलोकविलोकन सूर्यनिभा हरिभक्ति विवर्धन शौण्डतमा ॥ ७ ॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्य विरचितं द्वादशस्तोत्रेषु नवमस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

अथ दशमस्तोत्रम्

अवन श्रीपतिरप्रतिरधिकेशादिभवादे ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ १ ॥

सुरवन्द्याधिप सद्वरभरिताशेषगुणालम् ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ २ ॥

सकलध्वान्तविनाशन परमानन्दसुधाहो ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ ३ ॥

त्रिजगत्पोत सदार्चितचरणाशापतिधातो ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ ४ ॥

त्रिगुणातीतविधारक परितो देहि सुभक्तिम् ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ ५ ॥

शरणं कारणभावन भव मे तात सदाऽलम् ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ ६ ॥

मरणप्राणद पालक जगदीशाव सुभक्तिम् ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ ७ ॥

तरुणादित्यसवर्णकचरणाब्जामल कीर्ते ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ ८ ॥

सलिलप्रोत्थसरागकमणिवर्णोच्चनखादे ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ ९ ॥

कजतूणीनिभपावनवरजङ्घामितशक्ते ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ १० ॥

इबहस्तप्रभशोभनपरमोरुस्थरमाळे ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ ११ ॥

असनोत्फुल्लसुपुष्पकसमवर्णावरणान्ते ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ १२ ॥

शतमोदोद्भवसुन्दरिवरपद्मोत्थितनाभे ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ १३ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

जगदागूहकपल्लवसमकुक्षे शरणादे ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ १४ ॥

जगदम्बामलसुन्दरिगृहवक्षोवर योगिन् ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ १५ ॥

दितिजान्तप्रद चक्रधरगदायुग्वरबाहो ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ १६ ॥

परमज्ञानमहानिधिवदन श्रीरमणेन्दो ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ १७ ॥

निखिलाघौघविनाशकपरसौख्यप्रददृष्टे ।
करुणापूर्णवरप्रदचरितं ज्ञापय मे ते ॥ १८ ॥

परमानन्दसुतीर्थसुमुनिराजो हरिगाथाम् ।
कृतवान्नित्यसुपूर्णकपरमानन्दपदैषिन् ॥ १९ ॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्य विरचितं द्वादशस्तोत्रेषु दशमस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

अथ एकादशस्तोत्रम्

उदीर्णमजरं दिव्यं अमृतस्यन्द्यधीशितुः ।
आनन्दस्य पदं वन्दे ब्रह्मेन्द्रादि अभिवन्दितम् ॥ १ ॥

सर्ववेदपदोद्गीतमिन्दिराधारमुत्तमम् ।
आनन्दस्य पदं वन्दे ब्रह्मेन्द्रादि अभिवन्दितम् ॥ २ ॥

सर्वदेवादिदेवस्य विदारितमहत्तमः ।
आनन्दस्य पदं वन्दे ब्रह्मेन्द्रादि अभिवन्दितम् ॥ ३ ॥

उदारमादरान्नित्यं अनिन्द्यं सुन्दरीपतेः ।
आनन्दस्य पदं वन्दे ब्रह्मेन्द्रादि अभिवन्दितम् ॥ ४ ॥

इन्दीवरोदरनिभं सुपूर्णं वादिमोहनम् ।
आनन्दस्य पदं वन्दे ब्रह्मेन्द्रादि अभिवन्दितम् ॥ ५ ॥

दातृसर्वामरैश्वर्यविमुक्त्यादेरहो वरम् ।
आनन्दस्य पदं वन्दे ब्रह्मेन्द्रादि अभिवन्दितम् ॥ ६ ॥

दूराद्दुरतरं यत्तु तदेवान्तिकमन्तिकात् ।
आनन्दस्य पदं वन्दे ब्रह्मेन्द्रादि अभिवन्दितम् ॥ ७ ॥

पूर्णसर्वगुणैकार्णमनाद्यन्तं सुरेशितुः ।
आनन्दस्य पदं वन्दे ब्रह्मेन्द्रादि अभिवन्दितम् ॥ ८ ॥

आनन्दतीर्थमुनिना हरेरानन्दरूपिणः ।
कृतं स्तोत्रमिदं पुण्यं पठन्नानन्दमाप्नुयात् ॥ ९ ॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्यविरचितं द्वादशस्तोत्रेषु एकादशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

अथ द्वादशस्तोत्रम्

आनन्दमुकुन्द अरविन्दनयन ।
आनन्दतीर्थपरानन्दवरद ॥ १ ॥

सुन्दरीमन्दिरगोविन्द वन्दे ।
आनन्दतीर्थपरानन्दवरद ॥ २ ॥

चन्द्रकमन्दिरनन्दक वन्दे ।
आनन्दतीर्थपरानन्दवरद ॥ ३ ॥

चन्द्रसुरेन्द्रसुवन्दित वन्दे ।
आनन्दतीर्थपरानन्दवरद ॥ ४ ॥

वृन्दारवृन्दसुवन्दित वन्दे ।
आनन्दतीर्थपरानन्दवरद ॥ ५ ॥

मन्दिरस्यन्दनस्यन्दक वन्दे ।
आनन्दतीर्थपरानन्दवरद ॥ ६ ॥

इन्दिराऽनन्दक सुन्दर वन्दे ।
आनन्दतीर्थपरानन्दवरद ॥ ७ ॥

मन्दारस्यन्दितमन्दिर वन्दे ।
आनन्दतीर्थपरानन्दवरद ॥ ८ ॥

आनन्दचन्द्रिकास्यन्दक वन्दे ।
आनन्दतीर्थपरानन्दवरद ॥ ९ ॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्य विरचितं द्वादशस्तोत्रेषु द्वादशं स्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीभारतीरमणमुख्यप्राणान्तर्गत श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

४. श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र

॥ श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

परिचय

विष्णु सहस्रनाम श्री विष्णु का एक स्तोत्र है, जिसमें श्री विष्णु का १००८ नाम हैं. इसे कुरुक्षेत्र में भीष्म ने अपने हृदय में श्री विष्णु के आवेश के माध्यम से गाया था. यह स्तोत्र महाभारत के अनुशासन पर्व के २५४वें अध्याय में आता है. पद्म पुराण, स्कंद पुराण और गरुड़ पुराण मे इस्का अन्य संस्करण भी हैं, हालांकि महाभारत संस्करण पर अधिकांश आचार्यों ने टिप्पणी की है. इसमें येह तीन खंडों हैं, जिनमें से सभी एक ही स्रोत से नहीं हैं:

- **पूर्वपीठिका**: येह खंड भीष्म स्तोत्र का उच्चारण करने से पेहले आता हैं और होते हुअ स्तिथि के बारि में बताता है.
- **स्तोत्र**: यह वास्तविक स्तोत्र है जिसका उच्चारण करना चाहिए, जिसमें श्री हरि के १००८ नामों का उल्लेख है. भगवान के वास्तव में अनंत नाम हैं और उन्हें ब्रह्मांड का हर ध्वनि से उस्को ही दर्शाया गया है. येह शास्त्रों में कहा गया है. श्रीपाद मध्वाचार्य ने एक बार उल्लेख किया था कि कैसे वास्तव में विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र के १०० प्रकार के अर्थ हैं और उनकी कई व्याख्याएँ हैं.
- **उत्तरपीठिका**: येह विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र के बाद महाभारत का निरंतरता है. यहा विष्णु सहस्रनाम का फलश्रुति भी बताया गया है और कुछ दुसरे श्लोकों भी है.

विष्णु सहस्रनाम का जाप करने से श्री विष्णु हमारी आत्मा में अन्तर्यामी के रूप में प्रकट होते हैं और उनके गुणों का एक अंश हमारे भीतर प्रकट होता है. जीवों या जीवित संस्थाओं की तुलना परमात्मा के प्रतिबिंबों से की जा सकती है. हम उन पर निर्भर हैं, क्योंकि उनके बिना हमारा कोई अलग अस्तित्व नहीं है और हम सभी मामलों में उनके अधीन हैं. हालाँकि, उनके प्रतिबिंब होने के कारण, जीवों में ईश्वर के कुछ गुण होते हैं, जो अत्यंत सीमित मात्रा में होते हैं, जो कि तारतम्य (जीवों के पदानुक्रम) में जीव की स्थिति पर निर्भर करता है.

अपनी आत्मा में निवास करने वाले परमात्मा का आह्वान करके हम इन गुणों को आंशिक रूप से, अल्प मात्रा में प्रकट कर सकते हैं और अपने आप को, विशेष रूप से आध्यात्मिक रूप से, बेहतर बना सकते हैं. यही विष्णु सहस्रनाम का उद्देश्य है जो परब्रह्म के विभिन्न नामों का गुणगान करता है, जो उनके कुछ गुणों को इंगित करते हैं. श्री मध्वाचार्य ने एक बार कई विद्वानों की एक सभा में उल्लेख किया था कि विष्णु सहस्रनाम में वास्तव में १०० प्रकार के अर्थ और व्याख्याएँ हैं. जब उन्होंने श्री विष्णु के कुछ नामों की व्याख्या करना शुरू किया, तो विद्वानों को एहसास हुआ कि वे श्रीमद आचार्य की व्याख्या

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

को समझने में पूरी तरह से असमर्थ थे, क्योंकि यह उनकी बौद्धिक क्षमता से परे था. येह है भगवत नामा की अनंत महिमा.

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

मूलपाठः/पूर्वपीठिका

ॐ सकलसौभाग्यदायकं श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥

यस्य द्विरदवक्त्राद्याः पारिषद्याः परः शतम् ।
विघ्नं निघ्नन्ति सततं विष्वक्सेनं तमाश्रये ॥ २ ॥

व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम् ।
पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम् ॥ ३ ॥

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे ।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः ॥ ४ ॥

अविकाराय शुद्धाय नित्याय परमात्मने ।
सदैकरूपरूपाय विष्णवे सर्वजिष्णवे ॥ ५ ॥

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ ६ ॥

ॐ नमो विष्णवे प्रभविष्णवे ।

श्रीवैशम्पायन उवाच
श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥ ७ ॥

युधिष्ठिर उवाच
किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥ ८ ॥

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ।
किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥ ९ ॥

भीष्म उवाच
जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन् नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥ १० ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ।
ध्यायन् स्तुवन् नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥ ११ ॥

अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम् ।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥ १२ ॥

ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥ १३ ॥

एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः ।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा ॥ १४ ॥

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः ।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥ १५ ॥

पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
दैवतं दैवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥ १६ ॥

यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥ १७ ॥

तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम् ॥ १८ ॥

यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः ।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥ १९ ॥

ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः ।
छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान् देवकीसुतः ॥ २० ॥

अमृतांशूद्भवो बीजं शक्तिर्देवकिनन्दनः ।
त्रिसामा हृदयं तस्य शान्त्यर्थे विनियोज्यते ॥ २१ ॥

विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम् ।

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

न्यास

ॐ अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य ।
श्री भगवान् वेदव्यास ऋषिः ।
अनुष्टुप् छन्दः ।
श्रीमहाविष्णुः परमात्मा आन्तर्यामि देवता । (अथवा **श्रीभारतीरमण मुख्यप्राणान्तर्गत श्रीमहाविष्णुः परमात्मा आन्तर्यामि देवता**)
श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्र पारायणेन विनियोगः ॥

एक मुख्य मन्त्र या स्तौत्र का पारायण करनेसे पेहले, न्यासा करना चाहिए. एक मन्त्रको चार गुणों होते है – उस्को रचित करनेवाला या वोह मिलनेवाला ऋषि, उस्का छंदस या उच्चारण का तरीका, वोह मन्त्र का देवता और उस्का विनियोगा, यानि पारायण का प्रयोजन. इन सबको बताना को न्यासा कहा जाता है.

> ऋषि का नाम बोलते (यहा 'श्री भगवान वेदव्यासा ऋषिः..'), अपना दांया हाथ को अपना सर पे रखिये. छंदस केलिये मूह पर और देवता केलिये छाती पर.

न्यास के बाद, ध्यान श्लोक या मन्त्र को केहना चाहिये, जो उस्स देवता का रूप को बतात है, ताकि मन मे उसका ध्यान होसक्ता है.

ध्यान

अथ ध्यानम्

क्षीरोदन्वत्प्रदेशे शुचिमणिविलसत्सैकतेमौक्तिकानां मालाकॢप्तासनस्थः स्फटिकमणिनिभैर्मौक्तिकैर्मण्डिताङ्गः ।
शुभ्रैरभ्रैरदभ्रैरुपरिविरचितैर्मुक्तपीयूष वर्षैः आनन्दी नः पुनीयादरिनलिनगदा शङ्खपाणिर्मुकुन्दः ॥ १ ॥

भूः पादौ यस्य नाभिर्वियदसुरनिलश्चन्द्र सूर्यौ च नेत्रे कर्णावाशाः शिरो द्यौर्मुखमपि दहनो यस्य वास्तेयमब्धिः ।
अन्तःस्थं यस्य विश्वं सुरनरखगगोभोगिगन्धर्वदैत्यैः चित्रं रंरम्यते तं त्रिभुवन वपुषं विष्णुमीशं नमामि ॥ २ ॥

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥ ३ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

मेघश्यामं पीतकौशेयवासं श्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्भासिताङ्गम् ।
पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथम् ॥ ४ ॥

नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ ५ ॥

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् |
सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥ ६ ॥

छायायां पारिजातस्य हेमसिंहासनोपरि आसीनमम्बुदश्याममायताक्षमलंकृतम् |
चन्द्राननं चतुर्बाहुं श्रीवत्साङ्कित वक्षसं रुक्मिणी सत्यभामाभ्यां सहितं कृष्णमाश्रये ॥ ७ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

स्तोत्र

॥ हरिः ॐ ॥

ओं विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥ १ ॥

पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः ।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥ २ ॥

योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः ।
नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥ ३ ॥

सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।
संभवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥ ४ ॥

स्वयंभूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥ ५ ॥

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥ ६ ॥

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥ ७ ॥

ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥ ८ ॥

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥ ९ ॥

सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः ।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥ १० ॥

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥ ११ ॥

वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्माऽसम्मितः समः ।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥ १२ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः ।
अमृतः शाश्वत स्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥ १३ ॥

सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित् कविः ॥ १४ ॥

लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥ १५ ॥

भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ १६ ॥

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः ।
अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥ १७ ॥

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥ १८ ॥

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥ १९ ॥

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः ।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥ २० ॥

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥ २१ ॥

अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान् स्थिरः ।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥ २२ ॥

गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥ २३ ॥

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः ।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ २४ ॥

आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः संप्रमर्दनः ।
अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥ २५ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥ २६ ॥

असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ।
सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥ २७ ॥

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः ।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥ २८ ॥

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः ।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥ २९ ॥

ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः ।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥ ३० ॥

अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः ।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥ ३१ ॥

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः ।
कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥ ३२ ॥

युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।
अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥ ३३ ॥

इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः ।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥ ३४ ॥

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपांनिधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥ ३५ ॥

स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥ ३६ ॥

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः ।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥ ३७ ॥

पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत् ।
महर्द्धिरृद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥ ३८ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिञ्जयः ॥ ३९ ॥

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥ ४० ॥

उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥ ४१ ॥

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥ ४२ ॥

रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥ ४३ ॥

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥ ४४ ॥

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥ ४५ ॥

विस्तारः स्थावरस्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥ ४६ ॥

अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥ ४७ ॥

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥ ४८ ॥

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥ ४९ ॥

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ ५० ॥

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥ ५१ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥ ५२ ॥

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ॥ ५३ ॥

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः ।
विनयो जयः सत्यसंधो दाशार्हः सात्त्वतांपतिः ॥ ५४ ॥

जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः ।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ॥ ५५ ॥

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥ ५६ ॥

महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत् ॥ ५७ ॥

महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी ।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥ ५८ ॥

वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः सङ्कर्षणोऽच्युतः ।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥ ५९ ॥

भगवान् भगहाऽऽनन्दी वनमाली हलायुधः ।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥ ६० ॥

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।
दिवःस्पृक् सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥ ६१ ॥

त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक् ।
संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम् ॥ ६२ ॥

शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥ ६३ ॥

अनिवर्ती निवृत्तात्मा सङ्क्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतांवरः ॥ ६४ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः ॥ ६५ ॥

स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः ।
विजितात्माऽविधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥ ६६ ॥

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः ।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥ ६७ ॥

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः ।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥ ६८ ॥

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥ ६९ ॥

कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः ।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनंजयः ॥ ७० ॥

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः ।
ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥ ७१ ॥

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥ ७२ ॥

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः ।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥ ७३ ॥

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥ ७४ ॥

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥ ७५ ॥

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः ॥ ७६ ॥

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥ ७७ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

एको नैकः सवः कः किं यत् तत्पदमनुत्तमम् ।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥ ७८ ॥

सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥ ७९ ॥

अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक् ।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥ ८० ॥

तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः ॥ ८१ ॥

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥ ८२ ॥

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥ ८३ ॥

शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥ ८४ ॥

उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः शृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥ ८५ ॥

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥ ८६ ॥

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः ।
अमृतांशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ ८७ ॥

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधोऽदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥ ८८ ॥

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥ ८९ ॥

अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ॥ ९० ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

भारभृत् कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः ।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥ ९१ ॥

धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः ।
अपराजितः सर्वसहो नियन्ताऽनियमोऽयमः ॥ ९२ ॥

सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत् प्रीतिवर्धनः ॥ ९३ ॥

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः ।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥ ९४ ॥

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥ ९५ ॥

सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः ।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः ॥ ९६ ॥

अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥ ९७ ॥

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणांवरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ ९८ ॥

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥ ९९ ॥

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरश्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥ १०० ॥

अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः ।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥ १०१ ॥

आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥ १०२ ॥

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः ।
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥ १०३ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥ १०४ ॥

यज्ञभृद् यज्ञकृद् यज्ञी यज्ञभुक् यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृद् यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥ १०५ ॥

आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः ।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥ १०६ ॥

शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः॥ १०७ ॥

वनमाली गदी शार्ङ्गी शङ्खी चक्री च नन्दकी ।
श्रीमान् नारायणो विष्णुर्वासुदेवोऽभिरक्षतु ॥ १०८ ॥
श्री वासुदेवोऽभिरक्षतु ॐ नम इति ।

सर्वप्रहरणायुध ॐ नम इति ।

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

उत्तरन्यासः/उत्तरपीठिका

भीष्म उवाच
इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥ १ ॥

य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात्किञ्चित्सोऽमुत्रेह च मानवः ॥ २ ॥

वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत् ।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी चाप्नुयात्प्रजाम् ॥ ४ ॥

भक्तिमान् यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः ।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत् ॥ ५ ॥

यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च ।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥ ६ ॥

न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति ।
भवत्यरोगो द्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः ॥ ७ ॥

रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ॥ ८ ॥

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥ ९ ॥

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥ १० ॥

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥ ११ ॥

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
युज्येतात्मसुखक्षान्तिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः ॥ १२ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृत पुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥ १३ ॥

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः ॥ १४ ॥

ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥ १५ ॥

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ॥ १६ ॥

सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते ।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥ १७ ॥

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः ।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥ १८ ॥

योगो ज्ञानं तथा सांख्यं विद्याः शिल्पादि कर्म च ।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात् ॥ १९ ॥

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रींल्लोकान्व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्ययः ॥ २० ॥

इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।
पठेद्य इच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥ २१ ॥

विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभुमव्ययम् ।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ॥ २२ ॥

न ते यान्ति पराभवम ॐ नम इति ।

अर्जुन उवाच
पद्मपत्रविशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्तम ।
भक्तानामनुरक्तानां त्राता भव जनार्दन ॥ २३ ॥

श्रीभगवानुवाच
यो मां नामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पाण्डव ।
सोऽहमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न संशयः ॥ २४ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

स्तुत एव न संशय ॐ नम इति ।

व्यास उवाच
वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम् ।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ २५ ॥
श्री वासुदेव नमोऽस्तुत ॐ नम इति ।

पार्वत्युवाच
केनोपायेन लघुना विष्णोर्नामसहस्रकम ।
पठ्यते पण्डितैर्नित्यं श्रोतुमिच्छाम्यहं प्रभो ॥ २६ ॥

ईश्वर उवाच
श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने ॥ २७ ॥
श्रीरामनाम वरानन ॐ नम इति ।

ब्रह्मोवाच
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटि युगधारिणे नमः ॥ २८ ॥
सहस्रकोटि युगधारिणे ॐ नम इति।

सञ्जय उवाच
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ २९ ॥

श्रीभगवानुवाच
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ ३० ॥

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ ३१ ॥

आर्ताः विषण्णाः शिथिलाश्च भीताः घोरेषु च व्याधिषु वर्तमानाः ।
सङ्कीर्त्य नारायणशब्दमात्रं विमुक्तदुःखाः सुखिनो भवन्ति ॥ ३२ ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियर्वा बुद्ध्यात्मनावा पकृतेः स्वभावात् ।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥ ३३ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

इति श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीभारतीरमणमुख्यप्राणान्तर्गत श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

५. श्री त्रिविक्रम पण्डिताचार्या का श्री विष्णु स्तुति

येह स्तुति, श्री त्रिविक्रमा पण्डिताचार्या का वायु स्तुति, श्रीमत आचार्या का नरसिंहा नखरा स्तुति और श्री नारायणा पण्डिताचार्या का नरसिंहा और शिव स्तुतियों को पञ्च स्तुतियों कहा जाते है. सारे माध्वों इन स्तुतियों का उच्चारण हर दिन करना चाहिए.

॥ श्रीविष्णुस्तुतिः ॥

श्रीमध्वसंसेवितपादपद्मं रुद्रादिदेवैः परिसेव्यमानम् ।
ऋष्यादिभिर्वेदपथैः सुगेयं कथं नु पश्येयममोघवीर्यम् ॥ १ ॥

हृन्मन्दिरे सुन्दररत्नपीठे लक्ष्म्यात्मके सारतरे निविष्टम् ।
श्रीभूसमाश्लिष्टतनुं तथाऽपि पूर्णं निजानन्दमयं परेशम् ॥ २ ॥

अनन्तपूर्णेन्दुकिरीटशोभितं सुनीलस्निग्धालकशोभिसन्मुखम् ।
प्रत्यग्रकञ्जायतलोललोचनं सुचम्पकाकोरकनासिकायुतम् ॥ ३ ॥

प्रवालमध्यार्पितकुन्दकोरकं स्फुरत्कपोलद्युतिदीप्तकुण्डलम् ।
केयूरभूषायुतबाहुदण्डकं सुचक्रशङ्खाब्जगदाविराजितम् ॥ ४ ॥

ग्रैवेयरत्नाभरणादिभूषितं सत्कौस्तुभावेष्टितकम्बुकन्धरम् ।
सुवर्णसूत्राञ्चितसुन्दरोरसं विचित्रपिताम्बरधारिणं प्रभुम् ॥ ५ ॥

करिराजकरोपमोरुयुग्मं प्रियया सेवितजङ्घया समेतम् ।
वरकूर्मप्रपदेन शोभमानं ह्यनभिव्यक्तसुगुल्फपादयुग्मम् ॥ ६ ॥

नखराजिसुपूर्णचन्द्रकान्त्या नुतिमज्जनतापहारिणं रमेशम् ।
निजपूर्णसुबोधविग्रहं परमानन्दपरात्मदैवतम् ॥ ७ ॥

इति श्रीत्रिविक्रमपण्डिताचार्यविरचिता श्रीविष्णुस्तुतिः समाप्ता ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

६. श्री हरि वायु स्तुति

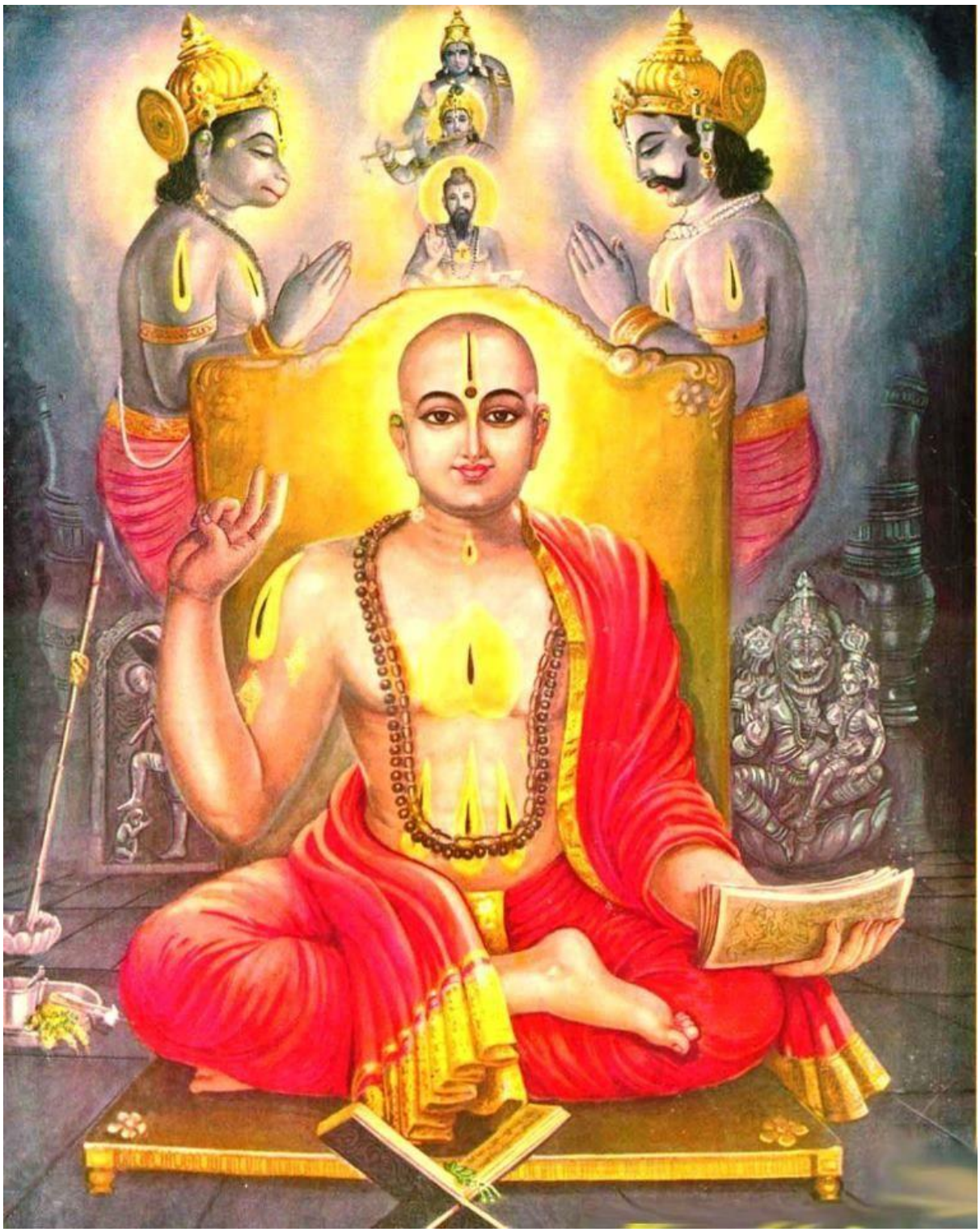

हरि वायु स्तुति श्री विष्णु और प्राण देव के तीन अवतारों, अर्थात श्री हनुमान, भीमसेन और मध्वाचार्या की प्रार्थना है. इसकी रचना श्री त्रिविक्रम पंडिताचार्य ने की थी, जो श्रीपाद मध्वाचार्य के सबसे प्रमुख शिष्यों में से एक और पूर्व स्मार्त विद्वान थे. जब उन्होंने एक बार

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

उडुपी मंदिर के आंतरिक गर्भगृह में देखा, जहां मध्वाचार्य श्री विष्णु की पूजा कर रहे थे, तो उन्होंने उन्हें तीन रूपों में देखा - हनुमान श्री राम की पूजा कर रहे थे, भीम श्री कृष्ण की पूजा कर रहे थे और श्रीमत आचार्य व्यास देव की पूजा कर रहे थे. उस दृश्य को देखकर, उन्होंने मुख्य प्राण देव और उनके तीन अवतारों की प्रशंसा करते हुए वायु स्तुति का उच्चारण किया. हालाँकि, श्रीपाद मध्वाचार्य ने कहा कि सभी कार्यों के माध्यम से श्री विष्णु का ध्यान करना आवश्यक है. यही कारण है कि उन्होंने वायु स्तुति से पहले और बाद में उच्चारण करने के लिए, नरसिंहा नख स्तुति की रचना की. इसलिए इसे भी यहां शामिल किया गया है.

॥ श्रीहरिवायुस्तुतिः ॥

॥ अथ श्री नखस्तुतिः ॥

पान्त्वस्मान् पुरुहूतवैरि बलवन्मातङ्ग माद्यद्घटा कुम्भोच्चाद्रि विपाटनाधिकपटु प्रत्येक वज्रायिताः ।
श्रीमत्कण्ठीरवास्य प्रतत सुनखरा दारितारातिदूर प्रध्वस्तध्वान्त शान्त प्रवितत मनसा भाविता भूरिभागैः ॥ १ ॥

लक्ष्मीकान्त समन्ततोऽपिकलयन् नैवेशितुस्ते समं पश्याम्युत्तम वस्तु दूरतरतोऽपास्तं रसो योऽष्टमः ।
यद्रोषोत्कर दक्ष नेत्र कुटिल प्रान्तोत्थिताग्नि स्फुरत् खद्योतोपम विस्फुलिङ्गभसिता ब्रह्मेशशक्रोत्कराः ॥ २ ॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्यकृता श्रीनृसिंहनखरस्तुतिः समाप्ता ॥

॥ अथ श्रीहरिवायुस्तुतिः ॥

श्रीमद्विष्णवङ्घ्रि निष्ठा अतिगुणगुरुतम श्रीमदानन्दतीर्थ त्रैलोक्याचार्य पादोज्ज्वल जलजलसत् पांसवोऽस्मान्पुनन्तु ।
वाचांयत्रप्रणेत्रीत्रिभुवनमहिता शारदा शारदेन्दुः ज्योत्स्नाभद्रस्मित श्रीधवळितककुभाप्रेमभारम्बभार ॥ १ ॥

उत्कण्ठाकुण्ठकोलाहलजवविदिताजस्रसेवानुवृद्ध प्राज्ञात्मज्ञान धूतान्धतमससुमनो मौलिरत्नावळीनाम् ।
भक्त्युद्रेकावगाढ प्रघटनसघटात्कार सङ्घृष्यमाण प्रान्तप्राग्र्याङ्घ्रि पीठोत्थित कनकरजः पिञ्जरारञ्जिताशाः ॥ २ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

जन्माधिव्याध्युपाधिप्रतिहतिविरहप्रापकाणां गुणानाम् अग्र्याणां अर्पकाणां चिरमुदितचिदानन्द सन्दोहदानाम् ।
एतेषामेशदोष प्रमुषितमनसां द्वेषिणां दूषकाणाम् दैत्यानामार्थिमन्धे तमसि विदधतां संस्तवेनास्मि शक्तः ॥ ३ ॥

अस्याविष्कर्तुकामं कलिमलकलुषेऽस्मिन्जनेज्ञानमार्गम् वन्द्यं चन्द्रेन्द्ररुद्र द्युमणिफणिवयोः नायकद्यैरिहाद्य ।
मध्वाख्यं मन्त्रसिद्धं किमुतकृतवतो मारुतस्यावतारम् पातारं पारमेष्ट्यं पदमपविपदः प्राप्तुरापन्न पुंसाम् ॥ ४ ॥

उद्यद्विद्युत्प्रचण्डां निजरुचि निकरव्याप्त लोकावकाशो बिभ्रद्भीमो भुजेयोऽभ्युदित दिनकराभाङ्गःदाढ्य प्रकाण्डे ।
वीर्योद्धार्यां गदाग्र्यामयमिह सुमतिंवायुदेवोविदध्यात् अध्यात्मज्ञाननेता यतिवरमहितो भूमिभूषामर्णिमे ॥ ५ ॥

संसारोत्तापनित्योपशमद सदय स्नेहहासाम्बुपूर प्रोद्यद्विद्यावनद्य द्युतिमणिकिरण श्रेणिसम्पूरिताशः ।
श्रीवत्साङ्कःधि वासोचित तरसरलश्रीमदानन्दतीर्थ क्षीराम्भोधिर्विभिन्द्याद्भवदनभिमतम्भूरिमेभूति हेतुः ॥ ६ ॥

मूर्धन्येषोऽन्जलिर्मे दृढतरमिहते बध्यते बन्धपाश क्षेत्रेधात्रे सुखानां भजति भुवि भविष्यद्विधात्रे द्युभर्त्रे ।
अत्यन्तं सन्ततं त्वं प्रदिश पदयुगे हन्त सन्ताप भाजाम् अस्माकं भक्तिमेकां भगवत उतते माधवस्याथ वायोः ॥ ७ ॥

साभ्रोष्णाभीशु शुभ्रप्रभमभयनभो भूरिभूभृद्विभूतिः भ्राजिष्णुर्भूरूभूणां भवनमपि विभोऽभेदिबभ्रेबभूवे ।
येनभ्रोविभ्रमस्ते भ्रमयतुसुभृशं बभ्रुवद्दुर्भृताशान् भ्रान्तिर्भेदाव भासस्त्वितिभयमभि भोर्भूक्ष्यतोमायिभिक्षून् ॥ ८ ॥

येऽमुम्भावम्भजन्ते सुरमुखसुजनाराधितं ते तृतीयम् भासन्ते भासुरैस्ते सहचरचलितैश्चामरैश्चारुवेशाः ।
वैकुण्ठे कण्ठलग्न स्थिरशुचि विलसत्कान्ति तारुण्यलीला लावण्या पूर्णकान्ता कुचभरसुलभाश्लेषसम्मोदसान्द्राः ॥ ९ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

आनन्दान्मन्दमन्दा ददति हि मरुतः कुन्दमन्दारनन्द्यावर्ताऽमोदान् दधानां मृदुपद मुदितोद्गीतकैः सुन्दरीणाम् ।
वृन्दैरावन्द्य मुक्तेन्द्वहिमगु मदनाहीन्द्र देवेन्द्रसेव्येमौकुन्दे मन्दरेऽस्मिन्नविरतमुदयन्मोदिनां देव देव ॥ १० ॥

उत्तप्तात्युत्कटत्विट् प्रकटकटकट ध्वानसङ्घट्टनोद्यद्विद्युद्व्यूढस्फुलिङ्ग प्रकर विकिरणोत्काथिते बाधिताङ्गान् ।
उद्गाढम्पात्यमाना तमसि तत इतः किङ्करैः पङ्क्तिलेतेपङ्क्तिर्ग्राव्णां गरिम्णां ग्लपयति हि भवद्वेषिणो विद्वदाद्य ॥ ११ ॥

अस्मिन्नस्मद्गुरूणां हरिचरण चिरध्यान सन्मङ्गलानाम्युष्माकं पार्ष्वभूमिं धृतरणरणिकः स्वर्गिसेव्यांप्रपन्नः ।
यस्तूदास्ते स आस्तेऽधिभवमसुलभ क्लेश निर्मूकमस्तप्रायानन्दं कथं चिन्नवसति सततं पञ्चकष्टेऽतिकष्टे ॥ १२ ॥

क्षुत् क्षामान् रूक्षरक्षो रदखरनखर क्षुण्णविक्षोभिताक्षान्आमग्नानान्धकूपे क्षुरमुखमुखरैः पक्षिभिर्विक्षताङ्गान् ।
पूयासृन्मूत्र विष्ठा क्रिमिकुलकलिलेतत्क्षणक्षिप्त शक्त्याद्यस्त्रव्रातार्दितान् स्त्वद्विष उपजिहते वज्रकल्पा जलूकाः ॥ १३ ॥

मातर्मेमातरिश्वन् पितरतुलगुरो भ्रातरिष्टाप्तबन्धोस्वामिन्सर्वान्तरात्मन्नजरजरयितः जन्ममृत्यामयानाम् ।
गोविन्दे देहिभक्तिं भवतिच भगवन्नूर्जितां निर्निमित्ताम्निर्व्याजां निश्चलां सद्गुणगण बृहतीं शाश्वतीमाशुदेव ॥ १४ ॥

विष्णोरत्युत्तमत्वादखिलगुणगणैस्तत्र भक्तिङ्गरिष्ठाम् संश्लिष्टे श्रीधराभ्याममुमथ परिवारात्मना सेवकेषु ।
यः सन्धत्ते विरिञ्चि श्वसन विहगपानन्त रुद्रेन्द्र पूर्वेष्वाध्यायंस्तारतम्यं स्फुटमवति सदा वायुरस्मद्गुरुस्तम् ॥ १५ ॥

तत्त्वज्ञान् मुक्तिभाजः सुखयिसि हि गुरो योग्यतातारतम्यात् आधत्से मिश्रबुद्धिं स्त्रिदिवनिरयभूगोचरान्नित्यबद्धान् ।
तामिस्रान्धादिकाख्ये तमसिसुबहुलं दुःखयस्यन्यथाज्ञान् विष्णोराज्ञाभिरित्थं शृति शतमितिहासादि चाकर्णयामः ॥ १६ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

वन्देऽहं तं हनूमानिति महितमहापौरुषो बाहुशालिख्यातस्तेऽग्र्योऽवतारः सहित इह बहुब्रह्मचर्यादि धर्मैः ।
सस्नेहानां सहस्वानहरहरहितं निर्दहन् देहभाजाम्अंहोमोहापहो यः स्पृहयति महतीं भक्तिमद्यापि रामे ॥ १७ ॥

प्राक्पञ्चाशत्सहस्रैर्व्यवहितमहितं योजनैः पर्वतं त्वम्यावत्सञ्जीवनाद्यौषध निधिमधिकप्राणलङ्कामनैषिः ।
अद्राक्षीदुत्पतन्तं तत उत गिरिमुत्पाटयन्तं गृहीत्वायान्तं खे राघवाङ्घ्रौ प्रणतमपि तदैकक्षणे त्वांहिलोकः ॥ १८ ॥

क्षिप्तः पश्चात्सत्सलीलं शतमतुलमते योजनानां सउच्चस्तावद्विस्तार वंश्च्यापि उपललवैव व्यग्रबुद्ध्या त्वयातः ।
स्वस्वस्थानस्थिताति स्थिरशकल शिलाजाल संश्लेष नष्टछेदाङ्कः प्रागिवाभूत् कपिवरवपुषस्ते नमः कौशलाय ॥ १९ ॥

दृष्ट्वा दृष्टाधिपोरः स्फुटितकनक सद्वर्म घृष्टास्थिकूटम् निष्पिष्टं हाटकाद्रि प्रकट तट तटाकाति शङ्को जनोऽभूत् ।
येनाजौ रावणारिप्रियनटनपटुर्मुष्टिरिष्टं प्रदेष्टुम् किंनेष्टे मे स तेऽष्टापदकट कतटित्कोटि भामृष्ट काष्ठः ॥ २० ॥

देव्यादेश प्रणीति दहिण हरवरावद्य रक्षो विघाताऽद्यासेवोद्यद्दयार्द्रः सहभुजमकरोद्रामनामा मुकुन्दः ।
दुष्प्रापे पारमेष्ठ्ये करतलमतुलं मूर्धिविन्यस्य धन्यम् तन्वन्भूयः प्रभूत प्रणय विकसिताब्जेक्षणस्त्वेक्षमाणः ॥ २१ ॥

जघ्नेनिघ्नेनविघ्नो बहुलबलबकध्वंस नाद्येनशोचत् विप्रानुक्रोश पाशैरसु विधृति सुखस्यैकचक्राजनानाम् ।
तस्मैतेदेव कुर्मः कुरुकुलपतये कर्मणाचप्रणामान् किर्मीरं दुर्मतीनां प्रथमं अथ च यो नर्मणा निर्ममाथ ॥ २२ ॥

निर्मृद्नन्नत्य यत्नं विजरवर जरासन्ध कायास्थिसन्धीन् युद्धे त्वं स्वध्वरे वापशुमिवदमयन् विष्णु पक्षद्विडीशम् ।
यावत्प्रत्यक्ष भूतं निखिलमखभुजं तर्पयामासिथासौ तावत्यायोजि तृप्त्याकिमुवद भघवन् राजसूयाश्वमेधे ॥ २३ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

क्ष्वेलाक्षीणाट्टहासहं तवरणमरिहन्नुद्वदोद्दामबाहोः बह्वक्षौहिण्य नीकक्षपण सुनिपुणं यस्य सर्वोत्तमस्य ।
शुष्रूशार्थं चकर्थ स्वयमयमथ संवक्तुमानन्दतीर्थ श्रीमन्नामन्समर्थस्त्वमपि हि युवयोः पादपद्मं प्रपद्ये ॥ २४ ॥

दह्यन्तींह्दहं मां दतमनिल बलाद्रावयन्तीमविद्या निद्रांविद्राव्य सद्यो रचनपटुमथापाद्यविद्यासमुद्र ।
वाग्देवी सा सुविद्या द्रविणद विदिता द्रौपदी रुद्रपत्न्यात् उद्रिक्ताद्रागभद्रा द्रहयतु दयिता पूर्वभीमाज्ञयाते ॥ २५ ॥

याभ्यां शुश्रूषुरासीः कुरुकुल जनने क्षत्रविप्रोदिताभ्याम् ब्रह्मभ्यां बृंहिताभ्यां चितसुख वपुषा कृष्णनामास्पदाभ्याम् ।
निर्भेदाभ्यां विशेषाद्विवचन विशयाभ्यामुभाभ्याममूभ्याम् तुभ्यं च क्षेमदेभ्यः सरिसिजविलसल्लोचनेभ्यो नमोऽस्तु ॥ २६ ॥

गच्छन् सौगन्धिकार्थं पथि स हनुमतः पुच्छमच्छस्य भीमः प्रोद्धर्तुं नाशकत्स त्वमुमुरुवपुषा भीषयामास चेति ।
पूर्णज्ञानौजसोस्ते गुरुतमवपुषोः श्रीमदानन्दतीर्थ क्रीडामात्रं तदेतत् प्रमदद सुधियां मोहक द्वेषभाजाम् ॥ २७ ॥

बह्वीः कोटीरटीकः कुटलकटुमतीनुत्कटाटोप कोपान् द्राक्चत्वं सत्वरत्वाच्चरणद गदया पोथयामासिथारीन् ।
उन्मथ्या तत्थ्य मिथ्यात्व वचन वचनान् उत्पथस्थांस्तथाऽयान् प्रायच्छः स्वप्रियायै प्रियतम कुसुमं प्राण तस्मै नमस्ते ॥ २८ ॥

देहादुत्क्रामितानामधिपति रसतामक्रमाद्वक्रबुद्धिः क्रुद्धः क्रोधैकवश्यः क्रिमिरिव मणिमान् दुष्कृती निष्क्रियार्थम् ।
चक्रे भूचक्रमेत्य क्रकचमिव सतां चेतसः कष्टशास्त्रं दुस्तर्कं चक्रपाणेर्गुणगण विरहं जीवतां चाधिकृत्य ॥ २९ ॥

तद्दुत्प्रेक्षानुसारात्कतिपय कुनरैरादृतोऽन्यैर्विसृष्टो ब्रह्माहं निर्गुणोऽहं वितथमिदमिति ह्येषपाशण्डवादः ।
तद्युक्त्याभास जाल प्रसर विषतरूद्दाहदक्षप्रमाण ज्वालामालाधरोऽग्निः पवन विजयते तेऽवतारस्तृतीयः ॥ ३० ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

आक्रोशन्तोनिराशा भयभर विवशस्वाशयाच्छिन्नदर्पा वाशन्तो देशनाशस्विति बत कुधियां नाशमाशादशाऽशु ।
धावन्तोऽश्लीलशीला वितथ शपथ शापा शिवाः शान्त शौर्याः त्वद्व्याख्या सिंहनादे सपदि ददृशिरे मायि गोमायवस्ते ॥ ३१ ॥

त्रिष्वप्येवावतारेष्वरिभिरपघृणं हिंसितोनिर्विकारः सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सकलगुणगणापूर्ण रूपप्रगल्भः ।
स्वच्छः स्वच्छन्द मृत्युः सुखयसि सुजनं देवकिं चित्रमत्र त्राता यस्य त्रिधामा जगदुतवशगं किङ्कराः शङ्कराद्याः ॥ ३२ ॥

उद्यन्मन्दस्मित श्रीर्मृदु मधुमधुरालाप पीयूषधारा पूरासेकोपशान्ता सुखसुजन मनोलोचना पीयमानं ।
सन्द्रक्ष्येसुन्दरं सन्दुहदिह महदानन्दं आनन्दतीर्थ श्रीमद्वक्तेन्द्रु बिम्बं दुरतनुदुदितं नित्यदाहं कदानु ॥ ३३ ॥

प्राचीनाचीर्ण पुण्योच्चय चतुरतराचारतश्चारुचित्तान् अत्युच्चां रोचयन्तीं शृतिचित वचनांश्राव कांश्चोद्यचुञ्चून् ।
व्याख्यामुत्खात दुःखां चिरमुचित महाचार्य चिन्तारतांस्ते चित्रां सच्छास्त्रकर्ताश्चरण परिचरां छ्रावयास्मांश्चकिञ्चित् ॥ ३४ ॥

पीठेरत्नोकपक्लृप्ते रुचिररुचिमणि ज्योतिषा सन्निषण्णम् ब्रह्माणं भाविनं त्वां ज्वलति निजपदे वैदिकाद्या हि विद्याः ।
सेवन्ते मूर्तिमत्यः सुचरितचरितं भाति गन्धर्व गीतंप्रत्येकं देवसंसत्स्वपि तव भघवन्नर्तितह्योवधूषु ॥ ३५ ॥

सानुक्रोषैरजस्रं जनिमृति निरयाद्यूर्मिमालाविलेऽस्मिन्
संसाराब्धौनिमग्नांशरणमशरणानिच्छतो वीक्ष्यजन्तून् ।
युष्माभिः प्रराथितः सन् जलनिधिशयनः सत्यवत्यां महर्षेः व्यक्तश्चिन्मात्र मूर्तिनखलु भगवतः प्राकृतो जातु देहः ॥ ३६ ॥

अस्तव्यस्तं समस्तश्रुति गतमधमैः रत्नपूगं यथान्धैः अर्थं लोकोपकृत्यैः गुणगणनिलयः सूत्रयामास कृत्स्नम् ।
योऽसौ व्यासाभिधानस्तमहमहरहः भक्तितस्त्वत्प्रसादात् सद्यो विद्योपलब्ध्यै गुरुतममगुरुं देवदेवं नमामि ॥ ३७ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

आज्ञामन्यैरधार्यां शिरसि परिसरद्रश्मि कोटीरकोटौ कृष्णस्याक्लिष्ट कर्मादधदनु सराणादर्थितो देवसङ्घैः ।
भूमावागत्य भूमन्नसुकरमकरोर्ब्रह्मसूत्रस्य भाष्यम् दुर्भाष्यं व्यास्यदस्योर्मणिमत उदितं वेदसद्युक्तिभिस्त्वम् ॥ ३८ ॥

भूत्वाक्षेत्रे विशुद्धे द्विजगणनिलये रौप्यपीठाभिधाने तत्रापि ब्रह्मजातिस्त्रिभुवन विशदे मध्यगेहाख्य गेहे ।
पारिव्राज्याधि राजः पुनरपि बदरीं प्राप्य कृष्णं च नत्वा कृत्वा भाष्याणि सम्यक् व्यतनुत च भवान् भरतार्थप्रकाशम् ॥ ३९ ॥

वन्दे तं त्वां सुपूर्ण प्रमतिमनुदिना सेवितं देववृन्दैः वन्दे वन्दारुमीशे श्रिय उत नियतं श्रीमदानन्दतीर्थम् ।
वन्दे मन्दाकिनी सत्सरिदमल जलासेक साधिक्य सङ्गम् वन्देऽहं देव भक्त्या भव भय दहनं सज्जनान्मोदयन्तम् ॥ ४० ॥

सुब्रह्मण्याख्य सूरेः सुत इति सुभृशं केशवानन्दतीर्थश्रीमत्पादाब्ज भक्तः स्तुतिमकृत हरेर्वायुदेवस्य चास्य ।
त्वत्पादार्चादरेण ग्रथित पदल सन्मालया त्वेतयायेसंराध्यामूनमन्ति प्रततमतिगुणा मुक्तिमेते व्रजन्ति ॥ ४१ ॥

इति श्रीत्रिविक्रमपण्डिताचार्य विरचितं श्रीहरिवायुस्तुतिः सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्री नखस्तुतिः ॥

पान्त्वस्मान् पुरुहूतवैरि बलवन्मातङ्ग माद्यद्घटा कुम्भोच्चाद्रि विपाटनाधिकपटु प्रत्येक वज्रायिताः ।
श्रीमत्कण्ठीरवास्य प्रतत सुनखरा दारितारातिदूर प्रध्वस्तध्वान्त शान्त प्रवितत मनसा भाविता भूरिभागैः ॥ १ ॥

लक्ष्मीकान्त समन्ततोऽपिकलयन् नैवेशितुस्ते समं पश्याम्युत्तम वस्तु दूरतरतोऽपास्तं रसो योऽष्टमः ।
यद्रोषोत्कर दक्ष नेत्र कुटिल प्रान्तोत्थिताग्नि स्फुरत् खद्योतोपम विस्फुलिङ्गभसिता ब्रह्मेशशक्रोत्कराः ॥ २ ॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्यकृता श्रीनृसिंहनखरस्तुतिः समाप्ता ॥

॥ श्रीभारतीरमणमुख्यप्राणान्तर्गत श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

७. श्री नारायण पण्डिताचार्या का श्री नरसिंह स्तुति

॥ श्रीनरसिंहस्तुतिः ॥

उदयरविसहस्रद्योतितं रूक्षवीक्षं प्रळयजलधिनादं कल्पकृद्वह्निवक्त्रम् ।
सुरपतिरिपुवक्षःक्षोदरक्तोक्षिताङ्गं प्रणतभयहरं तं नारसिंहं नमामि ॥ १ ॥

प्रळयरविकरालाकाररुक्चक्रवालं विरलयदुरुरोचीरोचिताशान्तराल ।
प्रतिभयतमकोपात्युत्कटोच्चाट्टहासिन् दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ २ ॥

सरसरभसपादापातभाराभिराव प्रचकितचलसप्तद्वन्द्वलोकस्तुतस्त्वम् ।
रिपुरुधिरनिषेकेणैव खोणङ्किशालिन् दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ ३ ॥

तव घनघनघोषो घोरमापघ्राय जङ्घापरिघमलघुमूरुव्याजतेजोगिरिं च ।
घनविघटितमागाद्दैत्यजङ्घालसङ्घो दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ ४ ॥

कटकिकटकराजद्धाटकाग्र्यस्थलाभाप्रकटपटतटित्ते सत्कटिस्थातिपट्वी ।
कटुककटुकदुष्टाटोपदृष्टिप्रमुष्टौ दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ ५ ॥

प्रखरनखरवज्रोत्खातरूक्षादिवक्षः शिखरिशिखररक्तैराक्तसन्दोहदेह ।
सुवकिभ्रुभकुक्षे भद्रगंभीरनाभे दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ ६ ॥

स्फुरयति तव साक्षात्सैव नक्षत्रमाला क्षपितदितिजवक्षोव्याप्तनक्षत्रमार्गम् ।
अरिदरधर जान्वासक्तहस्तद्वयाहो दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ ७ ॥

कटुविकटसटौघोद्धट्टनोद्भ्रष्टभूयो घनपटलविशालाकाशलब्धावकाशम् ।
करपरिघविमर्दप्रोद्यमं ध्यायतस्ते दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ ८ ॥

हठलुठदलधिष्ठोत्कण्ठ दष्टोष्ठ विद्युत्सट शठकठिनोरःपीठभित्सुष्ठुनिष्ठाम् ।
पठति नु तव कण्ठाधिष्ठघोरान्त्रमाला दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ ९ ॥

हत बहुमिहिराभासह्यसंहाररंहो हुतवहबहुहेतिह्रेषितानन्तहेति ।
अहितविहितमोहं संवहन् सैंहमास्यं दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ १० ॥

गुरुगुरुगिरिराजत्कन्दरान्तर्गते वा दिनमणिमणिश्रृङ्गे वान्तवह्निप्रदीप्ते ।
दधदतिकदुदंष्ट्रे भीषणोज्झिह्ववक्त्रे दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ ११ ॥

अधरितविबुधाब्धिध्यानधैर्यं विदध्यद्विविधविबुधधीश्रद्धापितेन्द्रारिनाशम् ।
विदधदतिकटाहोद्धट्टहासं दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ १२ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

त्रिभुवनतृणमात्रत्राणतृष्णार्द्रनेत्रत्रयमतिलधितार्चिर्विष्टपादम् ।
नवतररविताम्रं धारयन् रूक्षवीक्षं दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ १३ ॥

भ्रमदभिभवभूभृद्भूरिभूभारसद्भिद्भिदनवविभवभ्रूविभ्रमादभ्रशुभ्र ।
ऋभुभवभयभेत्तर्भासि भोभोविभोभी दह दह नरयिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ १४ ॥

श्रवणकचितचञ्चत्कुण्डलोच्चण्डगण्ड भ्रुकुटिकटुललाटश्रेष्ठनासारुणोष्ठ ।
वरद सुरद राजत्केसरोत्सारितारे दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ १५ ॥

कविकचकचराजद्रत्नकोटीरशालिन् गलगतगलदुस्रोदाररत्नाङ्गदाढ्य ।
कनककटककाञ्चीशिञ्जिनीमुद्रिकावन् दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ १६ ॥

अरिदरमसिखेटौ बाणचापे गदां सन्मुसलमपि दधानः पाशवर्यांकुशौ च ।
करयुगलधृतान्त्रस्रग्विभिन्नारिवक्षो दह दह नरयिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ १७ ॥

चट चट चट दूरं मोहय भ्रामयारीन् कडि कडि कडि कायं ज्वालरय स्फोटयस्व ।
जहि जहि जहि वेगं शात्रवं सानुबन्धं दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ १८ ॥

विधिभव विबुधेशभ्रामकाग्निस्फुलिङ्गप्रसविविकटदंष्ट्रोज्जिह्मवक्त्रत्रिनेत्र ।
कलकलकल कामं पाहि मां ते सुभक्तं दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ १९ ॥

कुरु कुरु करुणां तां साङ्कुरां दैत्यपोते दिश दिश विशदां मे शाश्वतीं देवदृष्टिम् ।
जय जय जयमूर्तेऽनार्त जेतव्यपक्षं दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितं मे ॥ २० ॥

स्तुतिरियमहितघ्नी सेविता नारसिंही तनुरिव परिशान्ता मालिनी साभितोलम् ।
तदखिलगुरुमाग्र्याश्रीदरूपा महद्भिस्सुनियमनयकृत्यैस्सद्गुणैर्नित्ययुक्ता ॥ २१ ॥

लिकुचतिलकसूनुस्सद्धितार्थानुसारी नरहरिनुतिमेतां शत्रुसंहारहेतुम् ।
अकृत सकलपापध्वंसिनीं यः पठेत्तां व्रजति नृहरिलोकं कामलोभाद्यसक्तः ॥ २२ ॥

इति श्रीमन्नारायणपण्डिताचार्य विरचिता श्रीनरसिंहस्तुतिः समाप्ता ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

८. श्री महालक्ष्मी स्तुति

(विष्णु पुराण, अंश १, अध्याय ९, श्लोकों ११६-१३१)

येह महालक्ष्मी देवि केलिये इन्द्र देव से रचित हुअ एक स्तुति है

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

नमस्ते सर्व्वभूतांनां जननीमब्जसम्भवाम् ।
श्रियमुन्निद्रपद्माक्षी विष्णोर्वक्षः स्थलस्थिताम् ॥ ११६ ॥

त्वं सिद्धिस्त्वं सुधा स्वाहा स्वधा त्वं लोकपावनि ।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूतिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती ॥ ११७ ॥

यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या च शोभने ।
आत्मविद्या च देवि त्वं विमुक्तिफलदायिनी ॥ ११८ ॥

आन्वीक्षिकी त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिस्त्वमेव च ।
सौम्यासौम्यैर्ज्जगद्रूपैस्त्वयैतद्देवि पूरितम् ॥ ११९ ॥

का त्वन्या त्वामृते देवि सर्व्वयज्ञमयं वपुः ।
अध्यास्ते देवदेवस्य योगिचिन्त्यं गदाभृतः ॥ १२० ॥

त्वया देवि परित्यक्तं सकलं भुवनत्रयम् ।
विनष्टप्रायमभवत् त्वयेदानीं समेधितम् ॥ १२१ ॥

दाराः पुत्रास्तथागारं सुहृद्धान्यधनादिकम् ।
भवत्येतन्महाभागे नित्यं त्वद्वीक्षणान्नृणाम् ॥ १२२ ॥

शरीरारोग्यमैश्वर्य्यमरिपक्षक्षयः सुखम् ।
देवि त्वदूदृष्टिदृष्टानां पुरुषाणां न दुर्लभम् ॥ १२३ ॥

त्वं माता सर्व्वभूतानां देवदवो हरिः पिता ।
त्वयैतद्विष्णुना चाद्य जगद् व्याप्तं चराचरम् ॥ १२४ ॥

मा नः कोशं तथा गोष्ठं मा गृहं मा परिच्छदम् ।
मा शरीरं कलत्रञ्च त्यजेथाः सर्व्वपावनि ॥ १२५ ॥

मा पुत्रान् मा सुहृद्वर्गं मा पशून् मा विभूषणम् ।
त्यजेथा मम देवस्य विष्णोर्वक्षःस्थलालये ॥ १२६ ॥

सत्त्वेन सत्यशौचाभ्यां तथा शीलादिभिर्गुणैः ।
त्यज्यन्ते ते नराः सद्यः सन्त्यक्ता ये त्वयामले ॥ १२७ ॥

त्वयावलोकिताः सद्यः शीलाद्यैरखिलैर्गुणैः ।
कुलैश्वर्य्यश्च मुह्यन्ते पुरुषा निर्गुणा अपि ॥ १२८ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

स श्लाध्यः स गुणी धन्यः स कुलीनः स बुद्धिमान् ।
स शूरः स च विक्रान्तो यस्त्वया देवि वीक्षितः ॥ १२९ ॥

सद्यो वैगुण्यमायान्ति शीलाद्याः सकला गुणाः ।
पराङ्मुखी जगद्धात्रि यस्य त्वं विष्णुवल्लभे ॥ १३० ॥

न ते वर्णयितुं शक्ता गुणान् जिह्वापि वेधसः ।
प्रसीद देवि पद्माक्षि मास्मांस्त्याक्षीः कदाचन ॥ १३१ ॥

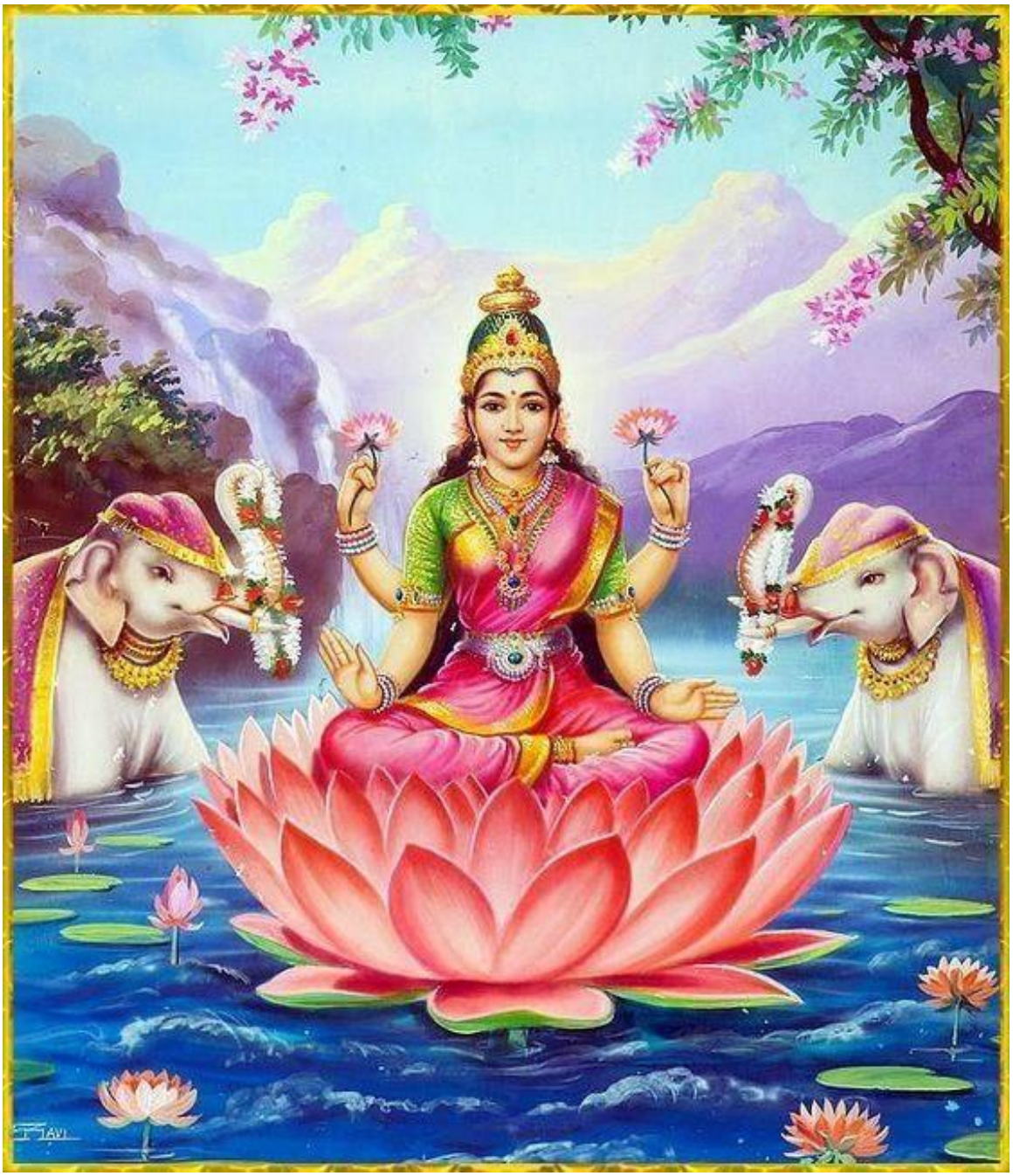

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

९. श्री शिव स्तुति

॥ श्रीशिवस्तुतिः ॥

स्फुटं स्फटिकसप्रभं स्फटितहारकश्रीजटं शशाङ्कदलशेखरं कपिलफुल्लनेत्रत्रयम् ।
तरक्षुवरकृत्तिमद्भुजगभूषणं भूतिमत्कदा नु शितिकण्ठ ते वपुरवेक्षते वीक्षणम् ॥ १ ॥

त्रिलोचन विलोचने लसति ते ललामायिते स्मरो नियमघस्मरो नियमिनामभूद्भस्मसात् ।
स्वभक्तिलतया वशीकृतवतीसतीयं सती स्वभक्तवशतो भवानपि वशी प्रसीद प्रभो ॥ २ ॥

महेश महितोऽसि तत्पुरुष पूरुषाग्र्यो भवानघोररिपुघोर तेऽनवम वामदेवाञ्जलिः ।
नमः सपदि जात ते त्वमिति पञ्चरूपोचितप्रपञ्चचयपञ्चवृन्मम मनस्तमस्ताडय ॥ ३ ॥

रसाघनरसानलानिलवियद्विवस्वद्विधुप्रयष्टृषु निविष्टमित्यज भजामि मूर्त्यष्टकम् ।
प्रशान्तमुत भीषणं भुवनमोहनं चेत्यहो वपूंषि गुणपूषितेऽहमहमात्मनोऽहंभिदे ॥ ४ ॥

विमुक्तिपरमाध्वनां तव पडध्वनामास्पदं पदं निगमवेदिनो जगति वामदेवादयः ।
कथञ्चिदुपशिक्षिता भगवतैव संविद्रते वयं तु विरलान्तराः कथमुमेश तन्मन्महे ॥ ५ ॥

कठोरितकुठारया ललितशूलया वाहया रणड्डमरुणा स्फुरद्धरिणया सखट्वाङ्ग्या ।
चलाभिरचलाभिरप्यगणिताभिरुन्नृत्यतश्चतुर्दश जगन्ति ते जयजयेत्ययुर्विस्मयम् ॥ ६ ॥

पुरा त्रिपुरसन्धनं विविधदैत्यविध्वंसनं पराक्रमपरम्परा अपि परा न ते विस्मयः ।
अमर्षिबलहर्षितक्षुभितवृत्तनेत्रोज्ज्वलज्ज्वलज्ज्वलनहेलया शलभितं हि लोकत्रयम् ॥ ७ ॥

सहस्रनयनो गुहः सहसहस्ररश्मिर्विधुर्बृहस्पतिरुताप्पतिः ससुरसिद्धविद्याधराः ।
भवत्पदपरायणाः श्रियमिमां ययुः प्रार्थितां भवान् सुरतरुर्भृशं शिव शिवां शिवावल्लभ ॥ ८ ॥

तव प्रियतमादतिप्रियतमं सदैवान्तरं पयस्युपहितं भृतं स्वयमिव श्रियो वल्लभम् ।
विबुध्य लघुबुद्धयः स्वपरपक्षलक्ष्यायितं पठन्ति हि लुठन्ति ते शठहृदः शुचा शुण्ठिताः ॥ ९ ॥

निवासनिलयाचिता तव शिरस्ततिर्मालिका कपालमपि ते करे त्वमशिवोस्यनन्तर्धियाम् ।
तथापि भवतः पदं शिवशिवेत्यदो जल्पतां अकिञ्चन न किञ्चन वृजिनमस्ति भस्मीभवेत् ॥ १० ॥

त्वमेव किल कामधुक् सकलकाममापूरयन्सदा त्रिनयनो भवान्वहति चार्चिनेत्रोद्भवम् ।
विषं विषधरान्दधत्पिबसि तेन चानन्दवान्विरुद्धचरितोचिता जगदधीश ते भिक्षुता ॥ ११ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

नमः शिवशिवाशिवाशिवशिवार्थं कृन्ताशिवं नमो हरहराहराहरहरान्तरीं मे दृशम् ।
नमो भवभवाभवप्रभवभूतये मे भवान् नमो मृड नमो नमो नम उमेश तुभ्यं नमः ॥ १२ ॥

सतां श्रवणपद्धतिं सरतु सन्नतोक्तेत्यसौ शिवस्य करुणाङ्कुरात्प्रतिकृतात्सदा सोचिता ।
इति प्रथितमानसो व्यधित नाम नारायणः शिवस्तुतिमिमां शिवं लिकुचिसूरिसूनुः सुधीः ॥ १३ ॥

इति श्रीमल्लिकुचिसूरिसूनुनारायणपण्डिताचार्यविरचिता शिवस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

१०. श्री पूर्णबोध स्तोत्र

॥ श्री पूर्णबोधस्तोत्रम् ॥

नलिनसौन्दर्यजिष्णुं पदाभ्यां ललितरूपाङ्गलीमंगलाभ्याम् ।
दलितनूत्रेन्दुमानं नखाल्या दलितशोणोपलालीकनाल्या ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ १ ॥

अहिविहङ्गेशभूतेशपूर्वैरहमहंपूर्वमित्याप्तचित्तैः ।
मुहुरहोमांसनेत्रैरदृष्टैरिह समाजुष्टजङ्घाङ्घ्रिरेणुम् ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ २ ॥

कनयमानं दधानं प्रकाशैः कनककौशेयमाशावकाशम् ।
जनमनोहारिवृत्तोरुकान्त्या जनितसंपर्कसंपद्विशेषम् ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ ३ ॥

परदुरारोहमारोहयेद्यं पुरुषकाण्डप्रकाण्डो निजाङ्कम् ।
निरवधिस्नेहसन्दोह मन्दस्फुरितहासावलोकेन साकम् ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ ४ ॥

सुवलिभंभद्रगंभीरनाभिं शिवमुदारोदरं मंलुमध्यम् ।
सुविपुलोरः स्थळं मानयन्ते कविजना यस्य सन्देहदेहम् ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ ५ ॥

विकटसुस्तंभसं भावनीयं प्रकटमंभोजनाभोपभाजा ।
विकटविद्याविलासाङ्गणं धीस्फुटकनन्मण्टपं यस्य रम्यम् ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ ६ ॥

भुजगभोगाभमुद्यम्य हृद्यं निजमुजं दक्षिणं लक्षणाढ्यम् ।
ललितमुद्रिक्तविज्ञानमुद्रं भज भजानन्तमित्यालपन्तम् ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ ७ ॥

भवदवोष्णेन तातप्यमानान् भुवि परं ताथमप्रेक्षमाणान् ।
भुवनमान्येन चान्येन दोष्णा भवतु भीर्मेति नः सान्त्व यन्तम् ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ ८ ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets

अधिगलं वानरो वन्यमालां विधिमुखोदारभूभारमालाम् ।
विधिविधात्राऽक्षमालां पुरा यो व्यधित लोकाततां कीर्तिमालाम् ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ ९ ॥

मृदुतमं विभ्रमं बिभ्रदासीद्वदनमिन्दोः समं यस्य साक्षात् ।
मदनमुद्दीपयेदिन्दुरेतन्मदसखं सन्दहेदेष भेदः ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ १० ॥

विमुमुहुः सिंहनादेन दैत्याः प्रमुमुहुः सज्जना: साधुवाण्या ।
ममगुरोः पूर्वतन्वोरिदानीं सममिदं व्याख्यया यस्य जातम् ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ ११ ॥

शिवमुखैरेकतो देववृन्दैः शुकमुखैऽन्यतः सन्मुनीन्द्रः ।
शुकशुचिव्याख्यमस्राकुलाक्षैः शिरसि बद्धाञ्जलिं भक्तिहेतोः ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ १२ ॥

तरुणहारावलीदन्तपङ्क्तिं शरणदं शारदाश्लाध्यवाचम् ।
करुणया मन्दहासेन मन्दं शरणयातं जनं वीक्षमाणम् ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ १३ ॥

रघुपवार्ष्णेयवासिष्ठरूपाः प्रभुमहाज्ञामनोज्ञावतंसाः ।
त्रिवपुषाऽप्युत्तमेनोत्तमाङ्गं प्रविदधिरे येन चान्येन तुष्टाः ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ १४ ॥

विधिभवेन्द्रादिदेवाधिनाथं कमलया सन्नतश्रीपदाञ्जम् ।
कमलनाभं भजन्तं सुभक्त्या सुजनतुष्टिप्रदं वासुदेवम् ।
प्रणतवान् प्राणिनां प्राणभूतं प्रणतिभिः प्रीणये पूर्णबोधम् ॥ १५ ॥

इति लिकुचान्वयकृतं पूर्णबोधस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीभारतीरमणमुख्यप्राणान्तर्गत श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

This document has been provided by Achyuta Bhakti Deets. Visit https://bhaktideets.org or https://elib.bhaktideets.org for more Shaastra related content.

श्री हरये नमः ।

श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

© Copyrights 2022-25 Achyuta Bhakti Deets